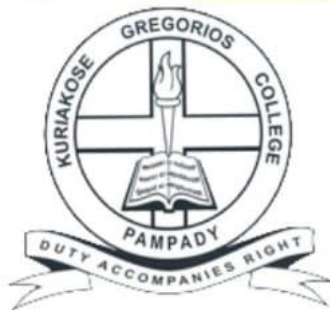


KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY



Website: www.kgcollege.ac.in

Phone: 0481 2505212

Email: mail@kgcollege.ac.in




3.3.1 RESEARCH PAPERS PUBLISHED

2021-22

SL NO	PUBLICATION	NAME OF AUTHOR	SUBJECT
1	“Malayalam Cinema Aur Third Gender Vimarsh”	Dr A Priya	Hindi
2	“Pravasi Sthree Kavitha Mein Jeevan Yatharth Ka Chithran”	Dr A Priya	Hindi
3	“Ikkisvim Sadi Ki Hindi Kavitha Mein Manaveey Samvedana Ke Aayaam”	Dr A Priya	Hindi
4	“Aadivasi Kavitha Ka Sowndaryabodh”	Dr A Priya	Hindi
5	“Anamika Ki Kavitha Mein Stree Vimarsh”	Dr A Priya	Hindi
6	“Jasinth Kerketta Ki Kavitha Mein Aadivasi Samvedana”	Dr A Priya	Hindi
7	“Chunouthiyom Ke Tahkhane Mein Aadivasi Samaj (‘Jangal Pahad Ke Padh Ke Vishesh Sandarbh Mein’	Dr A Priya	Hindi
8	“Varthaman Samay Aur Dadu Dayal Ki Rachanaom Ki Samajik Pakshadharatha”	Dr A Priya	Hindi
9	“Hindi Bhasha Ka Vaishvik Paridrishy”	Dr A Priya	Hindi
10	“Kavi Akkhitham Ka Rachana Sansar”	Dr A Priya	Hindi
11	“Thritheey Lingi Samvedana Ke Bhashy”	Dr A Priya	Hindi



12	Delhi air pollution cause and consequences-A critical analysis for the last few years	Dr Thomas Baby	Chemistry
13	Sustainable housing development in India and the need for evidence-based policy making	Dr Mini Joseph	Commerce
14	Current Development in the Synthesis of 4-Chromanone -derived Compounds	Dr Kanchana U S	Chemistry
15	Careers in Sports Management	Dr Joji M Philip	Physical Education


 Prof.(Dr.) Renny P. Varghese
 Principal
 Kuriakose Gregorios College
 Pampady, Kottayam - 686 502



PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-25 VOLUME 6 IMPACT FACTOR-SJIF-6.586, IIFS-4.125

ISSN-2454-6283 जुलाई-सितंबर, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

IMPACT FACTOR- IJIF-7.312 NEW

शोध-ऋतु

6

सम्पादक

डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक

अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -

डॉ. सुनील जाधव,

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,

हनुमान गढ़ कमान के सामने,

नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र



web:- www.shodhritu.com

Email - shodhrityu78@yahoo.com

WhatsApp 9405384672

14. मलयालम सिनेमा और थर्ड जेंडर विमर्श

— डॉ. प्रिया ए.

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल

उर्दू भाषा में 'इस्त्रा' शब्द का अर्थ है 'घुमकड़'। 'इस्त्रा' शब्द से अरबी भाषा में आया हुआ शब्द है 'हिजरा'। 'हिजरा' का अर्थ है 'पुण्य पुरुष'। 'हिजड़ा' शब्द की उत्पत्ति अरबी शब्द हिजरा से हुई है। भारतीय संस्कृति में देववाणी संस्कृत भाषा में हिजड़ों को 'पिंगला' कहा जाता है। हिजड़ा का इतिहास काफी पुराना है, जबसे मनुष्य जाति धरती पर है, तभी से हिजड़ा समुदाय का इतिहास है। महाभारत और रामायण के पन्नों को पलटने पर वहाँ हिजड़ों का इतिहास हम देख सकते हैं। मानव के ऐसा जाति को किन्नर या हिजड़ा कहते हैं जो लैंगिक रूप से न तो पुरुष होते हैं और ना ही स्त्री होते हैं। उनका प्रजनन अंग पूरी तरह विकसित नहीं होता है और ये वर्ग सेकेंडरी सेक्सुअल करेक्टर मिश्रित होते हैं। आज के समय में इस मानव जाति को 'थर्ड जेंडर' के नाम से जाना जाता है। इस समुदाय की समस्या वर्तमान समय में स्त्री-पुरुष वर्ग के सामने एक प्रश्न चिह्न के रूप में खड़ी है। अपनी अस्मिता की तलाश और अस्तित्व को कायम रखने के लिए यह वर्ग अपनों के बीच संघर्षरत है।

हमारे जीवन में सिनेमा, साहित्य, संगीत और अन्य कला रूपों का विशेष महत्व होता है। इसके तहत हमारी मानसिक जरूरतों की पूर्ति होती है, मनोरंजन होता है। समाज को बेहतर दिशा की ओर मोड़ने की प्रेरणा मिलती है। समकालीन साहित्य में नारी समस्या, दलित समस्या निम्नवर्ग की समस्याएँ एवं प्राकृतिक समस्याएँ केन्द्र में आइं। इसके साथ ही सामाजिक रूढ़ियों से त्रस्त थर्ड जेंडर की परेशानियों को भी साहित्य का विषय बनाया है। साहित्य के साथ-साथ सिनेमा जगत में भी हिजड़ा समुदाय की मानसिकता और जीवन संघर्ष का चित्रण होने लगा है। इनकी जीवन गाथा को चित्रित करते हुए सामाजिक स्तर पर होनेवाली समस्याओं का चित्रण गंभीरता से होने लगा है। मलयालम सिनेमा के क्षेत्र में हिजड़ा समुदाय के जीवन और संस्कृति के जीवंत दस्तावेज को प्रस्तुत करते हुए डॉ. संतोष सौपर्णिका के निर्देशन में 2012 में अर्द्धनारी फिल्म संपन्न हुई थी। विगत कुछ दशकों में मलयालम सिनेमा में नायक प्रधान या नायिका प्रधान फिल्मों को ही प्रधानता दी जाती थी। इस फिल्म ने एक नयी विचारधारा को प्रकट करते हुए, हाशिएकृत वर्ग की संवेदनाओं

को आत्मसात करते हुए उन्हें मुख्यधारा समाज में प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

अधेड़ अवस्था के बाद बुढ़ापे की ओर बढ़नेवाले, एक घुमकड़ हिजड़े की यादों से इस फिल्म की शुरुआत होती है। बचपन से ही पैरों में पायल पहनकर, माथे पर बिन्दी लगाकर, आँखों में काजल लगाकर, हाथों में चूड़ियाँ पहनकर, बालों को बढाकर, कक्षा में लड़कियों के साथ बैठकर रूप से, शरीर से लड़का होते हुए भी मन में लड़कियों की मानसिकता लेकर जीनेवाले 'विनयन' के जीवन के साथ फिल्म आगे बढ़ती है। 'विनयन' खुद को विनीता नाम से ही पुकारते थे। विनयन के इस विलक्षण रूप को देखकर पिता सहानुभूति का भाव प्रकट करते थे और भाई उस पर गुस्सा प्रकट करते थे। रिश्तेदारों एवं पड़ोसियों के डाँट-फटकार व परिहास पूर्ण व्यवहार से भी कोई बदलाव उसमें संभव न हुआ था। पुरुष का शरीर और स्त्री की मानसिक वेदना को लिए उसे जीना पड़ा। किशोरावस्था के प्रेमी बालु जब उसे छोड़कर गया तो उसका मन टूट गया। जब अपना भाई ही उसे मारने का षड्यंत्र रचता है तो वह पूर्ण रूप से टूटन का अनुभव करता है। वहाँ से वह सब कुछ छोड़कर पलायन करता है। विस्थापित होकर वह हिजड़ा समुदाय की टोली में पहुँचता है। मालविका की सहायता से हिजड़ा समुदाय की दुनिया में वह प्रवेश करता है। वहाँ उसे हिजड़ों की दुनिया के बारे में, उनके नियमों के बारे में नायक द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त होता है। गुरु उनके जीवन की प्रथा के बारे में जानकारी देते हैं। वहाँ विनयन को जमीला चेला के रूप में स्वीकार करती है।

हिजड़ों में गुरु-शिष्य परम्परा का एक अत्यन्त अनुशासित रूप देखने को मिलता है। उनके समाज में गुरु वरिष्ठ और सभी के द्वारा स्वीकृत होते हैं। अपने घर-परिवार को छोड़कर आनेवाले सभी हिजड़ों को अपने इस समुदाय के नियम और कानून मानना अनिवार्य होता है। नाच-गाकर वेश्यावृत्ति से एवं भिक्षाटन से वसूले गए धन से ही इनका जीविकोपार्जन होता है। यह उनकी प्रत्यक्ष आमदनी है। जमात के नियमानुसार उन्हें जीवन बिताना पड़ता है। हिजड़ों की टोली जहाँ रहती है, उस स्थान को हमाम कहा जाता है। वहाँ संतोषी माता की पूजा होती है। चेला को मातृ स्थान देकर, दक्षिणा के पैसा देकर, चरण स्पर्श करते हुए अपना नाम बदल दिया जाता है। इन रीति-रिवाजों को अपनाकर विनयन ने अपना नाम बदल दिया। हमाम में आकर विनयन का नाम 'मंजुला' में परिवर्तित होता है। एक वर्ष तक उसे चेला की सेवा करते हुए हमाम में ही रहना पड़ता है। एक साल

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
September 2021 Special Issue 02 Vol. VI



21^{वीं} सदी के हिंदी साहित्य में महिला लेखन की भूमिका

- अतिथि संपादक -

डॉ. राजेंद्र उमेकर

प्राचार्य,

बी.एस. पाटील कॉलेज, परतवाडा

- कार्यकारी संपादक -

डॉ. गजानन चव्हाण

प्रधान सचिव
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो. डॉ. जिजाबराव पाटील

अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो. डॉ. अरुण घोगरे

हिंदी विभागाध्यक्ष
बी.एस. पाटील कॉलेज, परतवाडा



प्रवासी स्त्री कविता में जीवन यथार्थ का चित्रण

डॉ. प्रिया ए.

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल-686502

मोबाईल – 9447294227 Email : priyauday111@gmail.com

समकालीन हिंदी साहित्य के क्षेत्र में 'प्रवासी साहित्य' एक नयी धारा बनकर अपनी भूमिका अदा कर रहा है। भारत के बाहर विदेशों में रहनेवाले भारतीय मूल के सृजनात्मक लेखन को मुख्य रूप से प्रवासी साहित्य कहा जाता है। प्रवासी लेखक अपनी रचनाधर्मिता के तहत अपने अनुभवों और मनोभावनाओं को अपने देश तक सम्प्रेषित करते हैं। तद्वारा वे अपनी मूल संस्कृति से जुड़ने का प्रयास करते हैं। कई प्रवासी साहित्यकार अपनी लेखन प्रणाली से देश और विदेश की संस्कृति के समन्वय एवं संवेदनाओं के भिन्न आयामों को प्रस्तुत करते हैं। प्रवासी साहित्य में 'अंजना संधीर' एक सशक्त कवयित्री के रूप में विद्यमान हैं। इनका जन्म उत्तरप्रदेश के रुढ़की में हुआ था। वे अमरीका के न्यूयार्क में रहकर अपने रचना कर्म को पूरी कर्मठता से निभा रही हैं।

अंजना संधीर की कविता में हमें विदेशी इतिहास, भूगोल, सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति आदि का परिचय मिलता है। उन्होंने समाज की समस्याओं को सही अर्थों में समझने का प्रयास किया है। उनकी सभी रचनाओं में मानवीय संवेदना के स्पंदन को परख सकते हैं। विदेशों में बसे भारतीयों के पराएणन से ग्रस्त जीवन की झाँकी प्रस्तुत करने के साथ ही देश की ओर वापसी की इच्छा को भी 'चलो, फिर एक बार' शीर्षक कविता व्यक्त करती है - "चलो/फिर एक बार/चलते हैं/हकीकत में/खिलते हैं फूल जहाँ/महकता है केसर जहाँ/सरसों के फूल और लहलहाती हैं फसलों/हँसते हैं रंग-बिरंगे फूल/मंडराती हैं तितलियाँ/छेड़ते हैं भँवरे/झूलती हैं झूलों में धडकनें/घेर लेती है सतरंगी दुपट्टों से/सावन की फुहारों में/चूमती है मन को/देती है जीवन/जहाँ जीवन लगता है सपना!"

इस कविता में एक ओर देश के विरासत की महत्ता को एवं उससे कट जाने के दंश को झेलते व्यक्ति की पीड़ा को देख सकते हैं। दूसरी ओर गाँव के परिवेश और लहलहाती खेतों की सुन्दरता की वर्णना को अत्यंत संजीवता से प्रकट किया है।

देश से बिछुड़ने की अंतरतम वेदना उनकी कविता की विशेषता है। अपनी मिट्टी, जन्मभूमि तथा मातृभाषा के लगाव-अलगाव को प्रवासी रचनाकार अपने भाव-बोध के अनुरूप अभिव्यक्त करते हैं। मन के भीतर की वेदना, संघर्ष, सुख-दुःख, यादें, कोमलता, उनके ज़ब्त आदि मानवीय संवेदनाओं से युक्त भावना को 'जिन्दगी अहसास का नाम है' शीर्षक कविता शब्दबद्ध करती है - "आँखें तो आँखें होती हैं/उन्हें रेत भी चुभती है/बर्फ के कण भी चुभते हैं क्षण भर के लिए/हो जाती हैं कस कर बंद/तब याद आते हैं/रेत के कणों के साथ जुड़े/अपने वतन के/कितने ही स्पर्श/जो भर देते हैं अहसास का आग/इस ठंडे देश में/जिंदा रहने के लिए/जिन्दगी अहसास का ही तो नाम है।"² अमेरिका की भौगोलिक विशेषता को स्पष्ट करने के साथ-साथ उन्होंने देश की विशेषता को भी चित्रित किया है। अमेरिका जैसे ठंडे देश में जिंदा रहने के लिए अपने वतन की याद उन्हें सहारा देती है। देश की याद अहसास का आग बनकर मन को स्पर्श करती है। जिन्दगी ऐसे अनुभव जगत से होकर ही आगे बढ़ती है। जीवन को गतिशीलता प्रदान करने में देशप्रेम की भावना महत्वपूर्ण होती है।

अमेरिका जैसे विकसित देश में रहनेवाले लोगों की जीवनशैली बहुत ही सुविधात्मक होती है। विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में पूरी दुनिया ही एक वैश्विक गाँव में तब्दील हो रही है। वर्तमान विश्व व्यवस्था में आर्थिक और व्यापारिक स्तर पर अमेरिका ही प्रथम स्थान पर आता है। हर व्यक्ति आज के समय में ग्लोबल पर्सन बन गया है। सुविधात्मक जीवन बितानेवाला मनुष्य मानवीय मूल्यों से दूर होता जा रहा है। आपसी संवाद भी कम हो गए हैं। 'संवाद चलना चाहिए' शीर्षक कविता संवादहीनता के माहौल को यों दर्शाती है - "ग्लोबल पर्सन में बदल गई/ग्लोबल वूमन/झूल गई झूले में स्मृतियाँ/मिठास बातों की, ज़ुबानों की/धोल गई मिश्री/में यहाँ रहूँ, वहाँ रहूँ, क्या फर्क पड़ता है?/फर्क पड़ता है कर्म का/स्वभाव का/मेल मिलाप का/अपेक्षा का/रिश्तों का, संवाद का/संवाद चलना ही जीवन है/यहाँ रहो या वहाँ/संवाद चलना चाहिए!"³



Shodh-Rityu तिमाही शोध-पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE- webinar special IMPACT FACTOR - SJIF-6.586, IIFS-4.125, ISSN-2454-6283

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

अंतरराष्ट्रीय बहु भाषीय एवं बहु शाखीय शोध-पत्रिका



पूना कॉलेज, पूना, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य और मिडिया का बदलता स्वरूप 06 मार्च, 2020
वेबीनार विशेषांक प्रकाशन दिनांक-रविवार, 15 अगस्त 2021

AUGUST 15, 2021



4-इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में मानवीय संवेदना के

आयाम

-डॉ. प्रिया ए.

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल

इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता मानवीय संवेदनाओं की कुतुबनुमा बनकर जिन्दादिली से अपनी उपस्थिति दर्ज करती है। कवि की अनुभूतियों का संसार अद्भुत है। संवेदनशील कवि जब अपने आस-पास बदलते हुए जीवन और उसके मूल्यों को देखता है तो वह चुप नहीं रहता है। अपने विचारों को शब्दबद्ध करके संवेदनाओं की कौंध से कविता को सजाता है। समकालीन कविता के केन्द्र में मनुष्य को ही प्रमुख स्थान दिया जाता है। उत्तराधुनिक मानवविरोधी समय की सच्चाई को समकालीन हिन्दी कविता अंकित करती है। वर्तमान समय के मानव जीवन के तनावों, कुंठाओं, विसंगतियों को इक्कीसवीं सदी की कविता ने आत्मसात किया है। मूल्य संक्रमण के इस प्रौद्योगिक दौर में साहित्य सिकुड़ रहा है। मानवीय संवेदनाएँ भी घट रही हैं। पर साहित्य बृहत आकार धारण करके मानवीय संवेदनाओं को पुनः स्थापित करने का प्रयास करता है।

इक्कीसवीं सदी की कविता सियासी – समाजी हादसों, अन्यायों और दुःखों की गहरी शिनाख्त है। सत्ता और शक्ति की विभिन्न आक्रामक संरचनाओं के विरुद्ध चीखते रहने की कवि नियति का सहर्ष स्वीकार इसमें विद्यमान है। समकालीन कवि चन्द्रकांत देवताले की 'खुद पर निगरानी का वक्त' नामक कविता सामाजिक अन्याय के प्रति जनता को आगाह करती है, "हॉफ रही कविता / कितनी कर सकती है छातीकुट्टा / कह रही बार-बार निगरानी रखो / जैसी दुश्मन पर वैसी ही खुद पर / विश्वासघात न हो जाए / अपनी भाषा, धरती और लोगों के साथ।"

मानवीय संकट के विकल समय में कवि अपनी रचनाधर्मिता को निभाते हुए कहते हैं कि जनता की भाषा, जो उनका स्वत्व है, अस्मिता है – उसे सुरक्षित रखने का आह्वान करते हैं।

इक्कीसवीं सदी के जन विरोधी समय ने किसानों की संस्कृति पर कुठाराघात किया है। किसान वर्ग व किसानों की चेतना को हाशिए पर धकेल दिया है। ऐसी विडम्बनात्मक सच्चाई को प्रस्तुत करती है – उमा शंकर चौधरी जी की कविता 'किसान की आत्महत्या भी मृत्यु है' "इतिहास में यह समय / जितना विकास के लिए दर्ज होगा / उससे अधिक होगा अपनी विडम्बनाओं के लिए / और जब बारी उन विडम्बनाओं की पड़ताल की आणी / तब जो सब से ऊपर आया / उसमें होगा / अखबार में छपी किसानों की आत्महत्या की खबर।"²

इस कविता के द्वारा कवि किसानों की संस्कृति की आवश्यकता एवं आर्थिक विपन्नता के कारण किसानों की आत्महत्या की अधिकता की पड़ताल करते हैं। ऐसे विद्रोहात्मक हालात से किसानों की संस्कृति को उबारने की कोशिश कविता में लक्षित है।

समकालीन कवि मंगलेश डबराल अपनी कविता 'भूमंडलीकरण' के माध्यम से उत्तराधुनिक परिवेश के स्वार्थी मानव की आपाधापी को यों शब्दबद्ध करते हैं – "बड़ी तेजी से दुनिया / बनती जा रही है एक बड़ा गाँव / लोभ क्रोध ईर्ष्या द्वेष के लिए / अब कहीं नहीं जाना पड़ता / हर चीज समान रूप से मिलने लगी है हर जगह / मनुष्यों के संबन्ध बहुत पतले तारों से / बाँध दिए गए हैं / जो बात-बात में टूट जाते हैं।"³

भूमंडलीकरण की उपज बाजारवादी संस्कृति ने मानव की संवेदनशीलता को खत्म कर दिया है। विज्ञापन तंत्र के तहत मनुष्य की सोच दब गई है। इक्कीसवीं सदी के दबे हुए मनुष्य की यातना को लीलाधर जगूडी अपनी कविता 'इक्कीसवीं सदी का एक विज्ञापन' में व्यक्त करते हैं – "वैज्ञानिक बंधुओं! मैं सारी चीजों का ठेकेदार हूँ / मुझे ऐसे बच्चे चाहिए जो सीधे आदमी हो जाएँ / जिनके बड़े होने और खड़े होने का इंतजार न करना पड़े / जो एकदम तैयार रहते हो और छुट्टी न लेते हो / जो सोचे नहीं, सिर्फ करें / बस बीमार न पड़ते हो / जो सिर्फ जिंएँ और मरें।"⁴

वैश्वीकरण बाजार और मीडिया के विस्फोटात्मक युग में रचना प्रक्रिया भी चुनौतीपूर्ण स्थिति का शिकार बनी हुई है। ऐसे त्रस्त माहौल में समकालीन कवि विमल कुमार अपनी कविता 'रोने का विज्ञापन' में मानवीय संवेदना एवं प्रतिबद्धता के

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages
August 2021, Special Issue

अतिथि संपादाक :

१. डॉ. भगवान कदम
२. डॉ. शिवशेट्टे गोविंद
३. डॉ. राठोड अनिलकुमार
४. डॉ. शिंदे प्रकाश
५. डॉ. शेख मुखत्यार
६. डॉ. वारले नागनाथ
७. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

“Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.”



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors

www.vidya



के माध्यम से प्रस्तुति होती है। युवा दिन में तीर-धनुष व बांसुरी लेकर गाय, बैल, बकरी इत्यादि पालतू जानवरों को चराने हेतु जंगल चले जाते हैं। तीर-धनुष उनकी रक्षा में तो बांसुरी उनके मनोरंजन के काम आती है। शाम को गांव वापस आने पर निश्चिंत भाव से गांव के युवा व वृद्ध अखरा में जुटने हैं और लोकगीतों की सुर लहरी व लोक नृत्यों की झूम सहित मांदर व नगाड़े की थाप पर गायन व नृत्य का दौर चलता है, जिसमें सभी तल्लीन हो सारे दुख-दर्द, अभाव व थकान से उबर जाते हैं। अखरा इनके जीवन में कितना महत्वपूर्ण है हम इन्हीं बातों से समझ सकते हैं। झारखण्ड की स्वर्ण धारा स्वर्णरिखा, कांची, शंख, कोयल, दामोदर आदि नदियां जनजीवन को जैसे तृप्त करती हैं वैसे ही यहां के नृत्य-गीत लोगों को आह्लादित करते हैं। प्रकृति के ये अनमोल उपहार यहां के बासिंदों के जीवन को सिंचित व पोषित करते हैं वैसे ही लोकगीत व लोकनृत्य उन्हें जीवन के संघर्षों से उत्पन्न क्षोभ व विषाद से उबारकर नित्य नव-जीवन हेतु नव ऊर्जा व नव उमंग का संचार कर उन्हें प्रतिदिन एक नये अंदाज में जीवन जीने के लिए तैयार करने में सहायक होती है। लोकगीत व लोकनृत्यों की थाप पर यूँ ही इनका जीवन सतत् प्रवाहमान होता रहता है कृ बेफिक्र, बेपरवाह अंदाज जिसमें सिर्फ आज की चिंता है, सिर्फ वर्तमान की चिंता न कि कल की ... ।

संदर्भ-सूची :

१. डॉ. कृष्ण देव शर्मा, लोक साहित्य, पृ.सं. ८१
२. डॉ. राम रतन प्रसाद, आदिवासी लोकगीतों की संस्कृति, प्रथम संस्करण : २०१४, अनंग प्रकाशन, दिल्ली, आइएसबीएन : ९७८-९३-८०८४५-२९-६
३. डॉ. विद्योत्तमा निधि, नागपुरी लोकगीत, लोकनृत्य और लोक वाद्य, पृथ्वी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: २०२०, आइएसबीएन : ९७८-८१-८६८४५-६९-०

58

आदिवासी कविता का सौंदर्यबोध

डॉ. प्रिया ए.

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
के.जी. कॉलेज पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के अनुसार आंतरिक सुन्दरता हमें संपूर्ण बनाती है। भारतीय अंतःकरण सौंदर्य के दर्शन पर केन्द्रित है। प्रकृति के साथ साहचर्य ही सौंदर्यबोध को पारिभाषित करता है। सर्वव्यापी प्राकृतिक सौंदर्य, वृक्ष, झरने, पर्वत, बादल, मौसम, पशु-पक्षी, हरियाली, नदियाँ, समुद्र, धरती, आकाश आदि प्रकृति के अंश हैं। प्रकृति के इस सौंदर्य को कवियों ने अपनी रचनाओं से जीवंत रखा है। आदिवासी समाज की कवयित्री प्रेस कुजूर ने अपनी कविताओं के माध्यम से आदिवासी समाज का सच्चा और प्रामाणिक चित्र खींचा है।

ऐतिहासिक संदर्भ में मुख्यधारा समाजद्वारा आदिवासियों की अवहेलना हुई है। आदिवासी स्त्रियों को दो प्रकार के शोषण का भी शिकार होना पड़ा था - एक स्त्री होने के कारण और दूसरा आदिवासी स्त्री होने के कारण। इसप्रकार दोयम दर्जे की पीड़ा को प्रेस कुजूर 'स्त्री' शीर्षक कविता में वाणी देती है - 'समय के पृष्ठ पर स्त्री/करती है रोपनी/प्यार दुलार ओर रिश्तों के बीज/उगते हैं जहाँ नागफनी के कांटों सा/हिंसा, अपमान. तिरस्कार और/बलात्कार के बीज/बावजूद इसके/पकती है उसकी किताब/शायद ही पढ़ी जाती होगी कभी/पूरी की पूरी/अपने शीर्षक में सिमटी/किताब के पृष्ठ/तरसते हैं तुम्हारी उंगलियों का स्पर्श/पाने के लिये।'१



आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages

July 2021, Issue-78, Vol-01

Editor**Dr. Bapu g. Gholap**

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)



"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbanesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat."

**Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors

www.vidya

संदर्भ सूची

डॉ.राही मासूम रजा, सिनेमा और संस्कृति,
संपादन एवं संकलन प्रो.कुवरपालसिंह, वाणी प्रकाशन

डॉ.ममता गंगवार, इतिहास के आइने में महिला
सशक्तिकरणय प्रकाशन वर्ष २००९, सरस्वती प्रकाशन,
कानपूरय प्रस्तावना से अशुद्ध

डॉ.ममता गंगवार, इतिहास के आइने में महिला
सशक्तिकरणय प्रकाशन वर्ष २००९, सरस्वती प्रकाशनय
कानपूरय प्रस्तावना से अशुद्ध,

प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या तक, पृ.४०,
दूसरी आवृत्ति २०१० राजकमल प्रकाशन

डॉ.अनुपम ओझाय भारतीय सिने सिध्दांतय
पहली आवृत्ति २००९, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राइवेट
लिमिटेड नयी दिल्ली

□□□

13

अनामिका की कविता में स्त्री विमर्श

Dr. Priya A.

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
के.जी. कॉलेज पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल

समकालीन जीवन संदर्भ में सबसे अधिक विचारणीय मुद्दा है — स्त्री जीवन की समस्याएं । स्त्री का आत्म संघर्ष प्रत्येक युग में निरंतर विद्यमान रहा। वह युग—युगों से दबी—कुचली रही थीस पुरुष मेधा समाज ने हमेशा उस पर आतंक दृष्टि रखी थी और सदा ही स्त्री के स्वत्व को चुनौती दी थी। पुरुषों द्वारा निर्मित समाज की पूरी व्यवस्था पुरुष के स्वार्थों पर निर्भर होती है। इस तरह पुरुष के वर्चस्ववाद के सामने स्त्री युग—युगों तक मूक रही। स्त्री सदा से ही कई तरह की समस्याओं के बीच घिरती रहती है। परिवार और समाज में स्त्री की कई समस्याएं हैं, जैसे — दांपत्य जीवन के दगर, घर और बाहर शारीरिक—मानसिक यौन शोषण, लैंगिक असमानता, नैतिकता का प्रश्न, दोयम दर्जे का नागरिक मानने की स्थिति आदि स्त्री जीवन की केंद्रीय समस्याएं हैं। ऐसी हालत में स्त्री की स्थिति में सुधार लाने, समाज में स्त्री को जागरूक बनाने और उसकी अस्मिता का बोध कराने में, उसे समान मानवाधिकार दिलाने के उद्देश्य से स्त्रीवाद का उदय हुआस आज 'स्त्रीवाद' या 'फेमिनिज्म' उस विचार या आंदोलन के लिए कहे जाते हैं जो स्त्री की सामाजिक समानता और अस्मिता के प्रश्न को बड़े गौरव से उठाते हैं। स्त्रीवाद से जुड़ा जो विमर्श है, वह साहित्य में 'स्त्री विमर्श' माना जाता है। यह पुरुष द्वारा निर्मित सारी व्यवस्थाओं का विरोधी विमर्श है। स्त्री विमर्श में उठानेवाले महत्वपूर्ण प्रश्न स्त्री की अपनी दृष्टि का है। पुरुष ने अपने दृष्टिकोण से ही दुनिया को देखा और अनुभव किया है। स्त्री और पुरुष की



SJIF Impact Factor - 5.34

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
June 2021 Special Issue 02

हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श



- विशेषांक प्रकाशक -

प्र. प्राचार्य, डॉ. एस. आर. मंगरे

अ. शि. मंडल द्वारा संचालित कला, वाणिज्य ट्रस्ट का च. ह. चौधरी कला, श. गो. पटेल वाणिज्य एवं वा. म. जा. पटेल विज्ञान महाविद्यालय, तलोदा।

- अतिथि संपादक -

प्रो. संजयकुमार शर्मा

हिंदी विभागाध्यक्ष,

अ. शि. मंडल द्वारा संचालित कला, वाणिज्य ट्रस्ट का च. ह. चौधरी कला, श. गो. पटेल वाणिज्य एवं वा. म. जा. पटेल विज्ञान महाविद्यालय, तलोदा।

- सह संपादक -

डॉ. रमा शर्मा

हिंदी कल्चर सेक्टर, टोंकरो, जापान

- सह संपादक -

डॉ. महेश गांगुर्डे

हिंदी विभागाध्यक्ष,

कला, वाणिज्य महाविद्यालय, अकलकुवा

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com



Akshara Publication



जसिन्ता केरकेट्टा की कविता में आदिवासी संवेदना

डॉ. प्रिया ए.

असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी विभाग,

के.जी. कॉलेज पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल-686502

मो : 9447294227, 9946318613 Email : priyauday111@gmail.com

हिन्दी की आदिवासी कविता ने आदिवासी समाज की अस्मिता को एक नया मुकाम प्रदान किया है। भारत के मूल निवासी आदिवासी वर्ग कई वर्ष पुरानी सभ्यता को संजोए हुए हैं। पहलेपहल उनकी अपनी स्वतंत्र सत्ता थी। जल-जंगल-जमीन पर उनका पूरा अधिकार था। औपनिवेशिक ताकतों के घुसपैठ होने पर उनपर अत्याचार बढ़ते गए। उन्हें अपनी संस्कृति से बेदखल किया गया। उनके संसाधनों पर वर्चस्व स्थापित किया गया। उनके अधिकारों पर तरह-तरह के अंकुश लगाए गए। उनके प्रति होनेवाले शोषण के कारण वे प्रतिरोध एवं संघर्ष का रास्ता अपनाने लगे। आदिवासी कविता वंचित व बहिष्कृत समुदाय की चेतना को केन्द्र में लाने की कोशिश करती है। शोषणकारी सत्ता के खिलाफ प्रतिरोध की पक्की जमीन तैयार करने की जद्दोजहद करती है।

समकालीन समय में जसिन्ता केरकेट्टा एक सशक्त आदिवासी कवयित्री के रूप में विख्यात हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने आदिवासी समाज के विविध पक्षों को अभिव्यक्त किया है। उनकी रचनओं में आदिवासी समाज का दुःख, दर्द, गुस्सा, आक्रोश आदि भाव उभरकर आते हैं। इसके द्वारा एक भारतीय युवा कवयित्री का काव्य-जगत में पदार्पण हो रहा है। उनके सारगर्भित और प्रगाढ़ शब्दों ने भारतीय काव्य में उपस्थिति दर्ज करायी है, साथ ही साथ विश्व काव्य में भी दस्तक दे रही हैं। अंगोर और जड़ों की जमीन उनके द्वारा रचित दो काव्यसंकलन हैं। उनकी रचनायें उनके व्यक्तिगत दृष्टिकोण, अनुभूतियों और दर्शन पर आधारित हैं। जसिन्ता केरकेट्टा का संबन्ध भारत के ऐसे आदिवासी समुदाय से है जो सैकड़ों-हजारों वर्षों से उपेक्षा और दमन का शिकार होता रहा है। उन्होंने आदिवासी वर्ग के दर्दिले इतिहास और कष्टकर वर्तमान को अपनी पत्रकारिता एवं काव्यात्मक रचनाओं में उकेरा है। सीजती हुई पीड़ा और अंगोर (अंगार) की तरह दबी हुई आभामय आशाओं को गेय भावप्रवणता एवं संघर्ष की गाथा सहित अभिव्यक्त देना ही उनकी रचना की उपलब्धि है।

आदिवासी समाज प्रकृति के निकट बसनेवाला है। प्रकृति के साथ आत्मीय संबन्ध रखनेवाले शान्ति प्रिय लोगों का जीवन प्रकृति की गोद में ही बीतता है। उनकी आजीविका कृषि केन्द्रित है। उनका प्रभात सूरज की पहली किरण से शुरू होता है और सूर्यास्त होने पर अपने ठिकाने की ओर वे भी लौट आते हैं। 'अंगोर' संकलन की पहली कविता 'गाँव की एक शाम' आदिवासी जीवन और प्रकृति के आत्मीय संबन्ध को यों स्पष्ट करती है - "वो लकड़ी ढोकर उतरती है पहाड़ से/उसके पीछे धीरे-धीरे सूरज भी उतरता है/दोनों को उतरते देखती है चुपचाप पहाड़ी नदी/और उसकी साँसों में शाम उतर आती है/पहाड़ से उतर नीचे झुक कर पहाड़ी नदी में/वो मारती है पानी के छींटे चेहरे पर/और सूरज की पोछता है पसीना/नदी के आंचल से।"¹

आदिवासी समाज का जीवन प्रकृति के पेड़ पौधे, पहाड़, नदी, सूर्य-चन्द्र के साथ गहरा संबन्ध रखनेवाला है। पर्यावरण सुरक्षा और सजगता को केन्द्र में रखकर वे प्रकृति की पूजा करते हैं। आजीवन प्रकृति के उपासक होते हैं।

वर्तमान समय में प्रकृति और आदिवासी वर्ग के बीच के गहरे संबन्ध को चूर करनेवाली एक उपभोगवादी संस्कृति पनप रही है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सूचना विस्फोट ने आदिवासी समाज की साँस्कृतिक, सामाजिक एवं स्वायत्तता पर भी खतरा पैदा कर दिया है। जंगल के भीतर खानों के उत्खनन के कारण इस क्षेत्र में बसे आदिवासियों और वन्य जीवों पर अस्तित्व का खतरा गहराता जा रहा है। 'सारंडा के फूल' नामक कविता इसी तथ्य को उद्घाटित करती है - "मशीनों की गंध से/जब नथुने भरने लगते हैं/और फटने लगते हैं कान/विस्फोटों से/xxxxxx/उसके अस्तित्व पर/कोई गहरा गड़ढ़ा/उभर आया है।"²

सारंडा जंगल झारखंड के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है। लौह अयस्क से भरपूर, साल वृक्षों से आच्छादित सारंडा के ये घने जंगल मुख्यतः आदिवासी जनजाति के निवास स्थान हैं। मशीनी विस्फोट के कारण यहाँ बसनेवाले आदिवासी वर्ग की जीवन संरचना पर विपत्ति के बादल मँडरा रहे हैं।





❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड



"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com



चुनौतियों के तहखाने में आदिवासी समाज (‘जंगल पहाड़ के पाठ’ के विशेष संदर्भ में)

डॉ. प्रिया ए.

हिंदी विभाग,

के.जी. कॉलेज पाम्पाड़ी, कोट्टयम, केरल

उत्तराधुनिक युग एक ओर विमर्शों का युग है और दूसरी ओर भूमंडलीकरण का भी। इस काल में शिक्षा एवं वैज्ञानिक प्रगति ने लोकतांत्रिक मूल्यों को भी मजबूत किया है। इसके फलस्वरूप साहित्य में कई प्रकार के विमर्श का दौर चल रहा है। भूमंडलीकरण एक वैश्विक प्रक्रिया है। इसके कारण हमारे देश के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक पक्षों पर भी भूमंडलीकरण का प्रभाव देख सकते हैं। सामाजिक परिवर्तन का प्रतिफलन साहित्यिक संरचनाओं में भी लक्षित होता है। इक्कीसवीं सदी में अपनी अस्मिता को पहचानते हुए अपने अधिकारों के प्रति सचेत होकर आदिवासी समाज अपनी आवाज बुलंद करने लगा है। आदिवासी समाज के कवियों ने सदियों के मौन को स्वर देने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी जीवन को व्यक्त करनेवाले प्रमुख कवि हैं — ‘महादेव टोपों’। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से चुनौतियों के तहखाने में केंद्र आदिवासी समाज को अपनी अस्मिता की पहचान कराने की कोशिश की है। आदिवासी समाज की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए अस्सी के दशक से वे सृजनरत हैं। ‘जंगल पहाड़ के पाठ’ उनका पहला स्वतंत्र-काव्यसंग्रह है। जल-जंगल, जमीन से जुड़े मुद्दों और सवालोंने इनके लेखन को एक अलग पहचान दी है। यह कवितासंग्रह आदिवासी समाज के संघर्ष, जद्दोजहद, आक्रोश, पीड़ा, प्रतिरोध

के अतिरिक्त उनकी आशाओं, आकांक्षाओं एवं सपनों से भी परिचित कराता है। आदिवासी जीवन और झारखंडी परिवेश से जुड़े, अनदेखे कई मुद्दों, प्रश्नों की स्थानीयता को वैश्विक संदर्भों से जोड़कर एक नया आयाम प्रस्तुत करने की पहल भी इसके द्वारा की गई है।

आदिवासी समाज अपनी संस्कृति के संवाहक होते हैं। वे अपनी संस्कृति को धरोहर मानकर पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसका संप्रेषण करते हैं। प्रकृति से उनका तालमेल भी बहुत गहरा होता है। अपनी संस्कृति से, प्राकृतिक उपादानों से सरोकार की भावना को दर्शानेवाली कविता है — ‘मैं खुश था’ शीर्षक कविता — ‘मैं खुश था, हालत पर अपनी-ध्याहे जैसा था आजाद था, खुश था अपने खेतों-खलिहानों सेधर में लगभग साल-भर का अन्न पाकरधामी में महुआ पेड़ के नीचे सोकर-ध्वरसात में गुंगू ओढ़, बारिश से बचकरध्वेतों से जंगली घास निकालकरध फसलों को जंगली जानवरों से बचाकरध्याहे जैसा था, खुश था।’^१

आदिकालिक और प्राचीन परंपराओं को अपने पारिवारिक — सामाजिक जीवन में व्यावहारिक रूप में प्रयोग करके ही आदिवासी समुदाय जीवन बिताता है। उनके जीवन-यापन के साधन जल, जंगल और जमीन से जुड़े हैं। उनकी विरासत, भाषा, शिक्षा, संस्कृति एवं जीवन शैली ही उनकी पहचान को सुरक्षित रखती है।

भूमंडलीय अर्थव्यवस्था के विस्तार ने पर्यावरण को उपेक्षित किया है। इसलिए अंधाधुंध और अनियंत्रित आर्थिक विकास प्रक्रिया जारी है। पर्यावरण पर होनेवाले आर्थिक विकास के खतरनाक प्रभावों पर लगाम नहीं लगाया जा रहा है। कॉर्पोरेट कूटनीतियाँ एवं पूँजीवादी बाजारी व्यवस्था मिलकर प्राकृतिक शोषण का कार्य कर रही हैं। मुनाफा कमाने की अनियंत्रित लोभ की मनोवृत्ति के कारण विकास के नाम पर जंगल बर्बाद हो रहे हैं। ऐसी विद्रुपात्मक सच्चाई को ‘त्रासदी, एक आशा’ शीर्षक कविता स्पष्ट करती है — ‘दुविधाओं की धूल पीछा नहीं छोड़ती/जंगल से शहर/और शहर से जंगल की सड़कों तक/तब-/मैं एक जंगली,

हिंदी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल)

वर्ष 63 जनवरी-मार्च तथा अप्रैल-जून 2021 अंक 1-2 ISSN : 2249-930X

परामर्शदाता

प्रो. कमल किशोर गोयनका

प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रधान संपादक

प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय

संपादक

प्रो. नरेन्द्र मिश्र

संपादन सहयोग

डॉ. निर्मला अग्रवाल

प्रो. मीरा दीक्षित

भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग



वर्तमान समय और दादू दयाल की रचनाओं की सामाजिक पक्षधरता

• डॉ. प्रिया ए

दादू दयाल हिंदी के भक्तिकाल में ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख संत कवि थे। उन्होंने हिन्दू-मुसलमानों की एकता पर बल दिया था। वे जांत-पाँत के निराकरण करनेवाले थे। संत दादू दयाल ने धर्म सुधार आन्दोलन को आगे बढ़ाया था। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों के धार्मिक अंधविश्वासों का खुलकर खंडन किया था। वे मुगल शासक शाहजहाँ के समकालीन थे। उन्होंने अपने विचारों को कविता के माध्यम से व्यक्त किया था। इन कविताओं को उनके शिष्यों ने संकलित किया, जिन्हें दादूजी की वाणी कहा जाता है। दादू दयाल का उद्देश्य पंथ स्थापना नहीं था, वे विभिन्न सम्प्रदायों के बीच समन्वय की भावना को प्रेषित करना चाहते थे। इस प्रकार सामाजिक पक्षधरता की भावना के परिणाम स्वरूप 'दादूपंथ' का उदय हुआ। उन्होंने युग द्रष्टा के रूप में सामाजिक विद्रूपताओं से आंदोलित होकर अनेक धार्मिक संप्रदायों के प्रभाव को आत्मसात किया।

संत कवियों ने समाज-कल्याण का मार्ग अपनाया और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में शोषित और प्रताड़ित मानव की समस्त प्रवृत्तियों, परिस्थितियों तथा भावनाओं का गंभीर विचारयुक्त यथा तथ्य चित्रण किया। इसके कारण संत साहित्य में आध्यात्मिक अनुभूतियों के साथ-साथ तत्कालीन जीवन का प्रतिबिंब भी प्रतिफलित होता है। संत काव्यधारा के सर्वप्रमुख कवि हैं - कबीरदास, दादू दयाल, मलूकदास, रज्जब, सुन्दरदास, गुरुनानक देव आदि। इन कवियों की कविताओं के द्वारा सामाजिक समरसता का भाव प्रस्फुटित हुआ। इन कवियों ने निर्गुण, निराकार, अविनाशी, अजन्मा, सर्वव्यापी और अमूर्त ब्रह्म की उपासना की।

दादू मानव-जागरण के लिए अपनी रचनाओं के माध्यम से आह्वान करते हैं। उन्होंने अपने जीवन का महान सत्य एवं सन्देश अपने कर्म, व्यवहार और आचरण से सिद्ध कर दिखाया है। दादू ने समस्त प्राणी जगत को इन्द्रियों से परे आत्मदृष्टि से देखने का प्रयास किया है। वे लिखते हैं - "चर्म दृष्टि देखे बहुत, आत्मदृष्टि एकि / ब्रह्मदृष्टि परिचय भया, तब दादू बैठा देखि।"¹

वे संपूर्ण जगत को एक ही ब्रह्माण्ड का अंश मानते हैं। सभी प्रकार के हिंसा, हत्या, अन्याय, संवेदनहीनता के क्रम को मिटाने की आवश्यकता के बारे में वे बताते हैं। वर्तमान समय में धरती का जीवन बहुत ही हिंसात्मक ढंग से आगे बढ़ रहा है। क्योंकि हमारे चारों ओर स्वार्थी, जड़वादी दृष्टिकोण व्याप्त है। भोगवादी, बर्बरता एवं बाजारवादी प्रवृत्तियों के कारण जनजीवन व प्रकृति शोषित, दुःखित और उत्पीड़ित बनी हुई है।

उत्तराधुनिक समय में जाति, वर्ण, वंश, देश आदि के विभिन्न भेदों के आधार पर पूरे देश में पाशिवक नर-संहार, महा-विनाश का वातावरण छाया हुआ है। पूरा



समय में दादू दयाल की रचनाओं की सामाजिक पक्षधरता के माध्यम से शांतिमय जीवन का दिशा निर्देश संभव होगा।

संदर्भ सूची

1. दादू दयाल ग्रंथावली – साखी – पृ. 25
2. दादू दयाल ग्रंथावली – साखी – पृ. 97
3. दादू दयाल ग्रंथावली – साखी – पृ. 215
4. दादू दयाल ग्रंथावली – साखी – पृ. 321
5. दादू दयाल ग्रंथावली – साखी – पृ. 227
6. दादू दयाल ग्रंथावली – साखी – पृ. 149

असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल-686502
मो : 9447294227, 9946318613
Email : priyauday111@gmail.com

हिंदी अनुशीलन ISSN : 2249-930X / 344

पीयर रिव्यूड/यू.जी.सी. केयर लिस्टेड



RNI No. KERHIN/2017/70008

ISSN No. 2456-625X



शोध सरोवर पत्रिका

10 अप्रेल 2021, वर्ष 5, अंक 18

'आरती', फोरेस्ट ऑफिस लेन, वषुतक्काट्टु, तिरुवनन्तपुरम -14

www.shodhsarovarpatrika.co.in



हिन्दी विश्वभाषा

त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका

अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी, तिरुवनन्तपुरम, केरल राज्य!





शोध सरोवर पत्रिका

आरती, वषुतक्काट्ट, तिरुवनन्तपुरम - 695 014, केरल राज्य।

RNI No. KERHIN/2017/70008 ISSN No. 2456-625 X

वर्ष 5

अंक 18

त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका

10 अप्रैल 2021

इस अंक में

मुख्य संपादक डॉ.पी.लता	संपादकीय	:	3
प्रबंध संपादक डॉ.एस.तंकमणि अम्मा	दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार-प्रसार, दशा, दिशा एवं संभावनाएँ	:	डॉ.एस.तंकमणि अम्मा 6
सह संपादक प्रो.सती.के डॉ.एस. लीलाकुमारी अम्मा श्रीमती वनजा.पी	भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन एवं अनुवाद	:	डॉ.बाबू.के.विश्वनाथन 15
संपादक मंडल प्रो.एस.कमलम्मा डॉ.जी.गीताकुमारी डॉ.गिरिजा.डी डॉ.बिन्दु.सी.आर डॉ.षीना.यू.एस डॉ.सुमा.आई डॉ.एलिसबत्त जोर्ज डॉ.लक्ष्मी.एस.एस डॉ.धन्या.एल डॉ.कमलानाथ.एन.एम डॉ.अश्वती.जी.आर	वैश्विक स्तर पर हिन्दी की स्वीकृति	:	डॉ.आशा एस नायर 19
	व्यतिरेकी भाषा विज्ञान : मलयालम और हिन्दी के अनुवाद के संदर्भ में सही उत्तर चुनें	:	डॉ.षीबा शरत एस 20
	हिन्दी का वैश्विक संदर्भ	:	डॉ.पी.लता 22
	विदेशों में हिंदी अध्ययन	:	डॉ.एलिसबत्त जोर्ज 23
	वैश्विक सन्दर्भ में हिंदी प्रचार में जुड़े प्रवासी साहित्यकारों की देन	:	डॉ.सौम्या वी.एम 25
	हिन्दी भाषा का वैश्विक परिदृश्य	:	डॉ.लक्ष्मी.एस.एस 26
	श्रद्धांजलि विष्णु नारायणन नंपूतिरि	:	डॉ.प्रिया.ए 30
	वैश्विक हिन्दी लेखक 'अज्ञेय': 'नदी के द्वीप' के विशेष संदर्भ में	:	डॉ.पी.लता 31
	कनाडा में हिन्दी की दशा और दिशा	:	डॉ.धन्या.एल 33
	अमेरिका में हिन्दी शिक्षण	:	डॉ.रंजीत रविशैलम 37
	श्रद्धांजलियाँ : पद्मश्री गुरु चेमञ्चेरी	:	अजिन्ना.आर.एस 40
	कुञ्जिरामन नायर, पी.बालचन्द्रन	:	डॉ.पी.लता 42
	विश्वभाषा और राज भाषा	:	डॉ.पी.लता 43

सूचना : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं। उनसे संपादक तथा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध सरोवर पत्रिका 10 अप्रैल 2021

शोध सरोवर पत्रिका, तिरुवनन्तपुरम, वर्ष 5 अंक 18 10 अप्रैल 2021



हिन्दी भाषा का वैश्विक परिदृश्य

◆ डॉ. प्रिया.ए



भाषा का संबन्ध मनुष्य के जीवन से अत्यंत निकट का होता है। भाषा के स्वरूप का निर्धारण मानव समाज द्वारा ही संभव है। भाषा मानव के

मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक परिवर्तन के साथ-साथ अपना स्वरूप भी बदलती है। हिन्दी भाषा भारत की आत्मा है, जो करोड़ों लोगों द्वारा बोली जाती है। वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा की अपनी विराटता सिद्ध हुई है। विश्व में ज्यादातर बोली जानेवाली भाषा के रूप में हिन्दी ने अपनी पहचान बनाई है।

हिन्दी की अंतर्राष्ट्रीयता को प्रमाणित करने के लिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य हो रहे हैं। विश्व पटल पर सैकड़ों देशों में भारतीय प्रवासी निवास करते हैं। जहाँ भी भारतीय प्रवासी हैं, वहाँ हिन्दी का प्रयोग किसी न किसी रूप में किया जाता है। अतः विश्व में जहाँ भी भारतीय मूल के निवासी हैं, वहाँ हिन्दी भाषा संपर्क भाषा और संस्कार की भाषा की हैसियत से विद्यमान है।

उत्तराधुनिक समय में हिन्दी विश्व में खासकर मनोरंजन की दुनिया में सबसे आगे है। यही कारण है कि सोनी, Z टी.वी, डिस्कवरी चैनल तथा विदेशी कार्टून चैनल आदि में कार्यक्रम भारत एवं पड़ोसी देशों में अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिन्दी भाषा में भी प्रसारित होने लगे हैं। हिन्दी भाषा को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह चैनलों, विज्ञापन एजन्सियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशिष्ट योगदान है।

हिन्दी जनसंचार माध्यमों की सबसे प्रिय एवं

अनुकूल भाषा बनकर निखरी है। उसके बहुविध स्वरूप और प्रयोजनमूलक रूप उजागर हुए हैं। रेडियो, टी.वी, कंप्यूटर, इंटरनेट एवं पत्रकारिता की अत्याधुनिक तकनीकों से आज की हिन्दी जुड़ी हुई है। भारतीय भाषाओं में हिन्दी भाषा का एक अलग महत्वपूर्ण स्थान है। जनभाषा के रूप में हिन्दी का सर्वोपरि महत्व है। यह साक्षर वर्ग की ही नहीं, निरक्षर वर्ग की भी संपर्क भाषा है। हिन्दी फिल्मों और बोलिवुड का भूमंडलीकरण हो रहा है, उससे बोलचाल की हिन्दी का प्रसार देश-देशान्तरों में हो रहा है। वैश्वीकरण ने हिन्दी भाषा को प्रभावित किया है और हिन्दी ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को भी लोकप्रिय बना दिया है। भारत एवं विदेश के कई विश्वविद्यालयों में, संस्थाओं में हिन्दी भाषा में अध्ययन हो रहा है। हिन्दी भाषा और साहित्य पर एम.पिल, पी एच.डी तथा डी.लिट के शोधकार्य होते हैं। हिन्दी की श्रेष्ठ रचनाओं का विदेशी भाषाओं में अनुवाद तथा विदेशी साहित्य रचनाएँ हिन्दी में अनूदित होकर उस हिन्दी अनुवाद के सहारे अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित होती हैं।

संचार और मीडिया के क्षेत्र में हिन्दी भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मोबाइल फोन के ज़रिए भी आजकल SMS या MMS भेज सकते हैं। Social मीडिया के क्षेत्र में भी हिन्दी भाषा ने अपनी पहचान बनाई है। इंटरनेट क्रांति के दौर में Facebook, Twitter, Whatsapp जैसे अनेक प्लेटफोर्म हैं, जिनसे पूरे विश्व को एक सूत्र में बाँधने का कार्य होता है। इन सभी जगहों में हिन्दी भाषा का भी महत्व होता है।

भारतीय प्रवासी लेखकों द्वारा साहित्य रचना के ज़रिए विदेशों में हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार हो रहा है। वे अपनी संवेदनाओं को हिन्दी भाषा में दर्ज करते



हैं। विविध साहित्य विधाओं में उनकी कई किताबें हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो रही हैं।

विश्व हिन्दी सम्मेलनों द्वारा भी हिन्दी भाषा को प्रगति एवं प्रचार मिल रहा है। कुल ग्यारह विश्व हिन्दी सम्मेलन चलाये गये हैं। विश्व हिन्दी सम्मेलनों में हिन्दी भाषा तथा भारतीय संस्कृति विषयक चर्चाएँ बखूबी से संपन्न होती हैं। हिन्दी का अतीत काफी संघर्षमय रहा है, वर्तमान मज़बूत है और भविष्य उत्साहवर्द्धक तथा उज्ज्वल रहेगा।

संदर्भ

1. डॉ. रामविलास शर्मा - भारत की भाषा समस्या

2. डॉ. दिलीप सिंह - अनुवाद का सामाजिक परिप्रेक्ष्य
3. हीरालाल बचौतिया - राजभाषा हिन्दी और उसका विकास
4. सुषम बेदी - हिन्दी भाषा का भूमण्डलीकरण : अस्मिता का सवाल और डायस्पोरा का लेखक
5. महिपाल सिंह एण्ड देवेन्द्र मिश्र - विश्व बाज़ार में हिन्दी

◆ असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाडी, कोट्टयम जिला,
केरल - 686502

श्रद्धांजलि

विष्णु नारायणन नंपूतिरि

मलयालम के विख्यात कवि प्रो.विष्णुनारायणन नंपूतिरि 25 फरवरी 2021 को श्रीवल्ली घर, तैक्काटु, तिरुवनन्तपुरम में स्वर्गस्थ हुए। उनका जन्म 2 जून 1939 को तिरुवल्ली के मेप्पाल श्रीवल्ली इल्लं में हुआ। पिता का नाम था विष्णु नंपूतिरि और माता का नाम था अदिति।

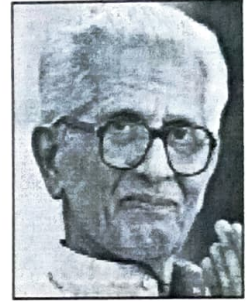
आप सरकारी कॉलेजों में अंग्रेज़ी के प्राध्यापक थे। यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम में अंग्रेज़ी विभाग का अध्यक्ष पद अलंकृत करते वक्त सेवानिवृत्त हुए। पत्नी है श्रीमती सावित्री। दो संतानों में बड़ी डॉ. अदिति नंपूतिरि एम.जी.कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम के मनेविज्ञान विभाग में प्रोफेसर रहीं। छोटी बेटी अपर्णा नंपूतिरि केन्द्रीय विद्यालय, तृशूर में अध्यापिका हैं। दामाद हैं, क्रमशः राधाकृष्णन नंपूतिरी (सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक, एस.बी.टी) और श्रीकुमार (प्रोड्यूसर, दूरदर्शन, तृशूर)।

आपकी स्कूली शिक्षा

तिरुवल्ली के कोच्चु पेरिड्डर्रा स्कूल में संपन्न हुई। कॉलेज शिक्षा सेंट बेकमान्स कॉलेज (चेड्डनाशेरी) तथा सेंट जोसेप्स कॉलेज (देवगिरि) में संपन्न हुई।

मलबार क्रिस्टियन क्लेज तथा एस.एन.कॉलेज (कोल्लम) इन गैर सरकारी कॉलेजों में अध्यापनवृत्ति करने के बाद सरकारी कॉलेज में अंग्रेज़ी अध्यापक नियुक्त हुए।

साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं में आपका योगदान महत्वपूर्ण रहा। केरल साहित्य अकादमी, प्रकृति संरक्षण समिति, केरल कला मंडल जैसी संस्थाओं में आपकी सेवा सराहनीय रही। 'केरल स्टेट भाषा इंस्टिट्यूट' में रिसर्च ऑफिसर तथा 'ग्रंथालोकम्' पत्रिका के संपादक भी रहे। आपने कवयित्री श्रीमती सुगतकुमारी तथा श्री.एन.वी.कृष्णवारियर के साथ साइलन्टवाली आंदोलन सक्रिय में भागीदारी की थी। आठ बार हिमालय में पत्नी के साथ तीर्थाटन किया।



पंजीयन संख्या/URNI No.-TELHIN/2016/70799

ISSN : 2456-9445

खंड-5, अंक-1, पोप-फाल्गुन, 2077 / जनवरी - मार्च, 2021

समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका



ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित मलयालम के श्रेष्ठ कवि अक्कित्तम का पूरा नाम अक्कित्तम अच्युतन नंबूतिरी है। मलयालम भाषा साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, अनुवाद जैसे सभी साहित्यिक विधाओं को उन्होंने अपने 46 से ज्यादा रचनाओं से संपन्न किया है। मलयालम साहित्य के लिए उनका योगदान महत्वपूर्ण है। उनकी रचनाएँ हैं— इरुपताम नूट्टाण्डिन्टे इतिहासम्, वेण्णकल्लिन्टे कथा, बलिदर्शनम्, पण्डत्ते मेलशांति, निमिष क्षेत्रम्, पंजवर्ण किली, अरडट्टम्, मधुविधु, इडिञ्जुपोलिञ्ज लोकम्, अमृतघटिका, कल्लिक्कोट्टिलिल, समत्वत्तिन्टे आकाशम्, करतलामलकम्, आलजाट्टम्मा, स्पर्शमणिकल, अञ्जु नाटोटिप्पाट्टुकल, मधुविधविनु शेषम्, देशसेविका, वलकिलुक्कम्, अनश्वरन्टे गानम्, अरडट्टम्, संजारिकल, वीरवादम्, मनोरथम्, मानसपूजा, ओरुकुला मुन्तिरिडा, धर्मसूर्यन आदि इनके काव्य संकलन हैं। अवतालडल (कहानी संकलन), ई एडत्ति नोने परयू (बालनाटक), ओरुकुला मुंदिरिडा बाल कविता का संकलन है। उपनयनम्, समावर्तनम् आदि उनके उपन्यास हैं। उन्हें कई पुरस्कारों से नवाजा गया है— केरल साहित्य आकदमी अवार्ड (1972), केंद्र साहित्य अकादमी अवार्ड (1973), ओटकुषल अवार्ड (1974), संजयन पुरस्कार (1952), पद्मप्रभा पुरस्कार (2002), अमृतकीर्ति पुरस्कार (2004), एषुत्तवन पुरस्कार (2008), मातृभूमि साहित्य पुरस्कार (2001), वयलार अवार्ड (2012), पद्मश्री पुरस्कार (2017), ज्ञानपीठ पुरस्कार (2019) आदि। अक्कित्तम की साहित्यिक यात्रा एवं जीवन बहुत ही व्यापक बना हुआ है। इनको बचपन से ही साहित्य और कला में विशेष रुचि थी। कविता के अलावा उन्होंने नाटक और उपन्यास भी लिखे हैं। उनकी काव्य रचना में एक विशेष भविष्य सूचक चरित्र है। कई प्रकार की सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का उल्लेख भी वे करते हैं। अपनी रचनाओं के द्वारा वे आधुनिक परिवेश का द्वार खोलते हैं। उनकी रचनाएँ आधुनिकता और पारंपरिकता के बीच सेतु का काम करती हैं।

अक्कित्तम का काव्य संसार आसमान की ओर छल्लाँग मारनेवाला नहीं, बल्कि मिट्टी की महक से संसिक्त होकर पृथ्वी की गोद में धँस जाने वाला है। उनकी कविता पंचभूत तत्वों में जीवनदायिनी पृथ्वी में घुल-मिल जाने की उमंग से भरी हुई है। उनकी 'भूमि' शीर्षक कविता उनकी इस संवेदनशील भावना को स्पष्ट करती है। इस कविता में आसमान से ज्यादा धरती के प्रति कवि मन का प्रेम एवं श्रद्धा की भावना देख सकते हैं।

अक्कित्तम के काव्य संकलन 'मनसाक्षियुटे पूक्कल' की रचनाएँ मानव जीवन एवं मनुष्य और प्रकृति के बीच के संबंध को प्रकट करनेवाली हैं। प्रस्तुत संकलन की कविताएँ भारतीय संस्कृति की आधारशिला आरण्यक संस्कृति के अनुभव यथार्थ को चित्रित करती हैं। उस संकलन की एक कविता है— 'सह्यनिल ओरु रात्रि' (सहयाद्रि में एक रात), सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् की श्रेष्ठ



13. डॉ. जे. आत्माराम, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, गच्चीबौली, हैदराबाद-500046,
ई-मेल-atmaram@uohyd.ac.in
14. डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर, 11, गांधी स्ट्रीट, विरुगम्बाक्कम, चेन्नै-600092, ई-मेल-rkrish2000@hotmail.com
15. डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी, हिंदी विभागाध्यक्ष, कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव, पोस्ट बॉक्स नं. 80, जलगांव-425001, महाराष्ट्र, ई-मेल-sunilkulkarni38@gmail.com
16. डॉ. प्रिया ए., असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, के. जी. कॉलेज, पाम्पाडी, कोट्टायम, केरल-686502,
ई-मेल-priyauday111@gmail.com
17. डॉ. सीमा गोंडाने, एसोसिएट प्रोफेसर, सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई-400001, ई-मेल-seemagondane@gmail.com
- डॉ. नंदलाल ठाकुर, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला-171005, ई-मेल-thakurnand9@gmail.com
18. डॉ. अनीता गांगुली, मकान नं.9-24, प्लॉट नं.174, वेंकटाद्रि टाउनशिप, फेस-1, 5वीं लाइन, चौधरीगूड़ा, घटकेसर, मेडचल-500088, तेलंगाना,
ई-मेल-anitaganguly1954@gmail.com
19. श्रीमती रचना चतुर्वेदी, 144, अशोका-आ-ला-मेखन, दूलापल्ली, हैदराबाद-500014, तेलंगाना, ई-मेल-rachna1166@gmail.com



Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (C)

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति
और साहित्य की पारस्परिकता

Guest Editor -

Dr. Vanmala Govindrao Gundre,
Principal,
Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai
Dist.- Beed

Chief Editor : **Dr. Dhanraj T. Dhangar**

Executive Editors :

Dr. Arvind A. Ghodke
Dr. Gopal S. Bhosale
Dr. Ramesh M. Shinde
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade



This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)



For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

तृतीय लिंगी संवेदना के भाष्य

डॉ. प्रिया ए.

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, के. जी. कॉलेज पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल-686502

मो : 9447294227, 9946318613

Email : priyauday111@gmail.com

समकालीन समय अस्मितामूलक संघर्षों का दौर रहा है; जिसमें व्यक्ति के सामने बुनियादी जरूरतें, समानता का अधिकार, विस्थापन की समस्या, आदि गहन समस्याएँ उपस्थित होने लगीं। मानव द्वारा बहुत-सी मानवीय भावनाओं को उपेक्षित किया गया। मूल्यों की च्युति व्याप्त हुई। मानवीय गरिमा पर लालच, लोभ, घृणा जैसे कुत्सित भाव प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं। आज के साहित्य में अस्मिता खोज और तत्संबन्धी विमर्शों का प्राधान्य देखा जाता है। इसके तहत हाशिएकृत व उपेक्षित वर्गों की चर्चा साहित्य में होने लगी। हिजड़ा, थर्ड जेंडर, तृतीय लिंगी, किन्नर आदि नामों से अभिहित 'जानेवाला यह समुदाय भारतीय समाज के उपेक्षित समुदायों के अन्तर्गत आता है। भारतीय समाज आरंभ से लिंग के आधार पर दो ही वर्गों - स्त्री और पुरुष को ही स्वीकारता आया है। इन वर्गों के साथ समाज में मौजूद तीसरे वर्ग 'तृतीय लिंगी' को तिरस्कृत किया गया। दशकों पूर्व से चले आ रहे - दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श से आच्छादित हिन्दी साहित्य के रचनालोक में हिजड़ा विमर्श भी अपना महत्व साबित कर रहा है। सभ्यता के आरंभिक चरण से ही इनको समाज उपहास, तिरस्कार एवं उपेक्षा की दृष्टि से देखता रहा।

समाज में यौनिक एवं जैविकभिन्नता के कारण उनके अस्तित्व को अस्वीकार किया गया और मुख्यधारा से हमेशा इनको अलग कर दिया गया। डॉ. लता अग्रवाल द्वारा लिखा गया काव्यसंकलन 'सिसकती दास्तान' थर्ड जेंडर की विडंबनाओं से सीधा साक्षात्कार करता है। समाज के द्वारा वंचित, शोषित, उपेक्षित एवं अभिशापित हिजड़ा समुदाय का प्रतिनिधि बनकर वे अपनी संवेदना को अभिव्यक्त करती हैं। प्रस्तुत काव्यसंग्रह में 122 कविताएँ हैं, जिनके माध्यम से कवयित्री ने समलैंगिक समुदाय की व्यथा को टटोलने का प्रयास किया है। 'हाँ! हम किन्नर हैं' नामक कविता प्रकृति के द्वारा दी गयी शारीरिक विकलांगता हेतु सामाजिक उपेक्षा और उपहास के दंश की गहराई को दर्शाती है। विकलांगता शरीर से है; पर मन, सपने एवं संवेदनाएँ भरपूर होते हैं। वे लिखती हैं - "किन्नर हैं/इस बात पर क्यों/शर्मिदा हों हम/यौनाँग में हमारे विकृति कोई आ गई/पर संवेदनाएँ डाली हैं मालिक ने/हममें पौरुष है/अपरिमित/स्त्री और पुरुष दोनों का/फर्ज निभाते हैं/हम अर्धनारीश्वर हैं/किन्नर कहलाते हैं।"¹

हिजड़ा समुदाय के बेहद जायज दर्द को कवयित्री ने मर्मस्पर्शी ढंग से व्यक्त किया है। स्त्री और पुरुष दोनों का दायित्व निभानेवाले इस समुदाय को समाज किन्नर कहकर उपहास करता है।

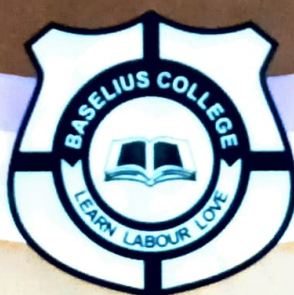
एक ओर समाज द्वारा इनका निरादर होता है और दूसरी ओर अपनी कोख से जन्म देनेवाली माँ और उसका पिता ही उसे उपेक्षा और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। ऐसे अभिशप्त संतान को जन्म देने के कारण खुद की हालत को व भगवान को रात-दिन कोसते हैं। समाज में उन्हें एक सम्मानित स्थान का हक ईश्वर ने दिया है, जिसका निरादर हम कर रहे हैं। अपने प्रति होनेवाले संवेदनशून्य वातावरण को 'आखिर क्यों?' शीर्षक कविता शब्दबद्ध करती है - "जन्मते ही मेरे/चेहरे सबके/क्यूँ मायूम हुए/घर-भर के अधरों की मूँकों पर कफ़्यूँ लगे,/देख मुझको/सबने मुख मोड़ा/किन्नर कहकर साथ छोड़ा/लगता दिल में/किसी के ठोर/जहाँ पाऊँगा मैं, क्या मैं/तेरी भी गोद नहीं पाऊँगा?"²



BASELIUS RESEARCHER

A BIANNUAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES AND RESEARCH

JANUARY - JUNE 2021
ISSN No: 0975-8658



NAAC RE-ACCREDITED @ A (3.11)

PUBLISHED ON BEHALF OF
BASELIUS RESEARCH GUIDANCE CENTRE
BASELIUS COLLEGE, KOTTAYAM
KERALA, INDIA - 686 001

VOL. XXII NO. 1

JANUARY - JUNE 2021



एकान्त श्रीवास्तव की कविता में लोक संस्कृति ('मिट्टी से कहुँगा धन्यवाद' संकलन के विशेष संदर्भ में)

डॉ. प्रिया ए.

शोध सारांश :- वैश्वीकरण ने भारत के आर्थिक और सामाजिक ढाँचे को पूर्ण रूप से प्रभावित किया है। आर्थिक उदारीकरण और भूमंडलीकरण ने एक नए पूँजीवाद के रूप को जन्म दिया, जो हमारे देश के लिए विपत्तिदायक है। इसका कुप्रभाव समाज के हर तबके पर अपना वर्चस्व जमा हुआ है। फलस्वरूप समाज केवल उपभोक्ता बनकर रह गया है। मनुष्यता के लिए हानिकारक बन गया है। ऐसे विकल सामाजिक परिवेश को सही मार्ग दर्शन देने के लिए समकालीन कवि प्रयास करते हैं। 'एकान्त श्रीवास्तव' अपने कवि कर्म की बुनियादी शर्त के रूप में आत्म सजगता को ही प्रमुख मानते हैं। बाज़ारवादी वर्चस्व के खिलाफ लोक संस्कृति का माहौल रचने का उपक्रम उनकी रचनाओं की विशेषता है। वे बाज़ारवादी हमलों के संक्रमण को साँस्कृतिक मूल्यों से प्रतिरोध करने का प्रयास करते हैं। लोकजीवन के बहुआयामी घटना क्रमों का वर्णन हम उनकी कविता में देख सकते हैं। उनकी कविताएँ लोकसंस्कृति की स्मृतियों से भरी, जाने-पहचाने सुखों और दुःखों के उजले - काले रंगों से रँगी हुई एक दुनिया का दस्तावेज़ प्रस्तुत करती हैं। विरोधी समय से संघर्ष करते हुए दुर्दम जिजीविषा से गतिशील होती है। पर्यावरण सजगता से ओतप्रोत होकर, सशक्त भाषा संसार रचकर पाठकों की संवेदना से सीधा संलाप करती है।

Key Words: - वैश्वीकरण, उदारीकरण, पूँजीवाद, लोकजीवन, लोक संस्कृति, बाज़ारीकरण, मानवीय मूल्य, औद्योगीकरण



Delhi Air Pollution cause and consequences- A Critical Analysis for the last Few Years

¹*Thomas Baby, Abin S Mathew, Rijith George Thomas, Libin Sabu, Athira Saji

Department of Chemistry, Kuriakose Gregorios College Pampady,
Kottayam, Kerala-686502

E-mail: thomas.babyv22@gmail.com

Tel: 9446516859

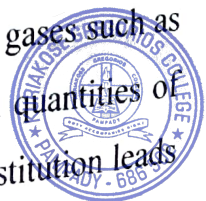
Abstract

Delhi is the fifth most populated metropolis in the world with around 19.3 million inhabitants as per the report of year 2022. The environmental problems in Delhi are really a threat to the well-being of both rural and urban inhabitants as well as to the flora and fauna. It is one of the most heavily polluted cities in India with a reported high concentration of particulate matter. This year the average air quality index (AQI) was reported to be 212, which is the highest value compared to the last three consecutive years. Central Pollution Control Board reported a twenty-one days of poor air quality in May 2022, which is definitely alarming. This study aims to provide a statistical data of the cause and consequences of Delhi air pollution for the past few years.

Keywords: Anthropogenic sources, meteorological factors, PM10, Smog.

Introduction

Pure air and drinking water are the basic rights of a citizen in anywhere or everywhere in the world. Pure air is a mix of different gases such as oxygen, nitrogen, carbon dioxide, argon, and very small quantities of other gases in a fixed proportion. Any change in this constitution leads



to air pollution that affects the environment and consequently humans [1]. Now air pollution has become major concern worldwide. Five most polluted countries are Bangladesh, Chad, Pakistan, Tajikistan and India as per the latest report of World Health Organization [2]. Major sources of air pollution include natural as well as anthropogenic sources. Natural sources of air pollution include volcanic activity, dust, sea-salt, forest fires, lightening, soil outgassing etc. Anthropogenic sources include stationary point sources like emission from industries, mobile sources like vehicular emission, marine vessels, and airplanes, waste disposal landfills, open burning and so on.

On the basis of origin, air pollutants are classified into primary and secondary air pollutants. Primary air pollutants are those emitted directly from a source. Pollutants like sulphur dioxide, carbon monoxide, lead, ammonia etc. come under this category. Secondary pollutants are formed by the result of reactions between primary air pollutants and other atmospheric constituents. Ozone, peroxyacetyl nitrate (PAN), smog are some the secondary air pollutants formed in the presence of solar energy. On the basis of chemical composition, air pollutants are again classified into organic and inorganic air pollutants. Hydrocarbons, ketones, aldehydes, alcohols and amines are some of the examples of organic air pollutants. Some of the sulphur, carbon and nitrogen containing compounds are categorized as potent inorganic pollutants [3]. On the basis of state of the material, air pollutants are classified into gaseous air pollutants and particulate air pollutants. Particulate air pollutants or particulate matter (PM) are microscopic solid or liquid matter suspended in the earth's atmosphere. This is an important class of air pollutant with severe impact on atmosphere.

Particulate matter is sub divided into total suspended particulate matter (TSPM) obtained by high-volume bulk sampling using a filter substrate. This include PM10 with particles size less than 10 μm in diameter. PM 2.5 with particle size less than 2.5 μm in diameter. PM1.0 with particles less than 1 μm in diameter [4]. The air pollutants responsible for serious health hazards and environmental hazards are categorized as criteria pollutants by the US Environmental Protection Agency (EPA). This includes, photochemical oxidants, particulate air pollutants, ozone, sulphur oxides, carbon monoxide and lead causing acid rain, smog, property damage and so on [5]. Major health effects pollutants like sulphur dioxide, nitrogen dioxide, PM10 and PM2.5 are shown in Figure 1.

Sulphur Dioxide Lung diseases Reduced pulmonary function Decrease tracheal mucous clearance Pneumonia Burning of nose and throat	Nitrogen Dioxide Burning eyes Breathing difficulty Cardiovascular diseases Pulmonary inflammation Aging
PM10 Stroke Respiratory symptoms Chronic bronchitis Lung cancer Cardiovascular issues High blood pressure	PM2.5 Pulmonary diseases Cardiovascular diseases Diabetes mellitus Birth disorders

Figure 1. Health effects of major air pollutants in Delhi

Delhi the capital of air pollution

The real-time air quality index in Delhi on 7th July 2022 was 156 and reported to be a highly unhealthy situation. The twenty-four-hour



average air quality index was 322 on 6th July 2022 at 4 pm. The energy policy institute at the university of Chicago warned that an average Indian resident may set to lose five years of life expectancy, if the WHO norms about air pollution are not followed [6]. At this critical scenario, the Commission for Air Quality Management (CAQM) has decided to ban the use of coal in all applications in the entire Delhi-NCR region from January 1, 2023.

Local climatic and seasonal factors highly affect the air quality of Delhi apart from the vehicular and industrial emissions [7]. The land-locked territory, surrounded by desert, hot plains and cool hill regions restricts the dilution of emissions. Delhi is in the subtropical belt with all extreme weather conditions. Winter is the most critical season for Delhi which dominated by dry and cold air and low wind conditions. A layer of warm air covers the bottom layer containing pollutants that leads to severe air pollution. Smog formation during the winter season is another problem in Delhi. Climatic as well as vehicular pollution are the major reason for smog formation. Tons of crop residues are burned during the harvest season in Indo Gangetic plains. This smoke with fog and other pollutant materials turned into smog. Increased amount of PM10 is the reason for the deterioration of air quality during summer. But the pollution is found to be minimum during rainy season [8]. There are lot of air quality monitoring stations in and around Delhi for continuous updates and analysis (Figure 2).



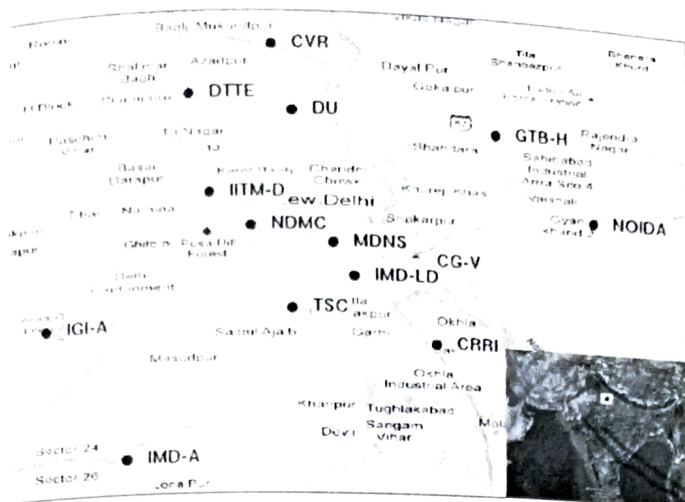


Figure 2. Air quality monitoring stations in Delhi [9]

Deepavali a major festival in north India, celebrates during the mid of autumn and winter, may be another reason for the degradation of air quality.

Delhi air pollution for the last few years

The air quality in Delhi during the Deepavali celebration for the year 2010 was monitored and studied by the Central Pollution Control Board (CPCB), Delhi. It was carried out seven locations considering all the factors. Average temperature was 21.2°C , humidity profile of 75.5% and a wind speed of 0.9 m/sec. There was variation in the concentration of sulphur dioxide and nitrogen dioxide in the locations. But the concentration of the respirable suspended particulate matter (RSPM) increased in all the monitored regions in comparison to the previous years.

Similar air monitoring was done in seven locations on 26th October 2011 under an average temperature of 26.4°C with a humidity profile of 39% and a wind speed of 1.1 m/sec. The air pollutant level was found to be less compared to 2010. Sulphur dioxide and nitrogen



dioxide concentration show the similar trend but RSPM concentration decreased in all the locations. This was due to the favorable meteorological conditions like increase in mixing height, increase in temperature, increase in wind speed in combination with decreased relative humidity.

In contrast to the previous years, air monitoring taken on 13th November 2012 exhibited a decrease in air quality in all the locations. Sampling was done at a temperature of 20.2°C, relative humidity 68% and a wind speed of 0.43 m/sec. These adverse meteorological conditions ultimately lead to the increase of sulphur dioxide, nitrogen dioxide and RSPM values in all the locations.

Similar in-depth ambient air quality monitoring was carried out on 3rd November 2013 by CPCB and analysed the impact of bursting of crackers on environment. Sampling was done under a temperature of 21°C, humidity of 69% and a wind speed of 0.19 m/sec. sulphur dioxide and nitrogen dioxide concentrations exhibited variation in the locations but RSPM values increased in all the locations compared to the previous years. The increased PM10 value was attributed to the adverse meteorological conditions like low wind speed and lower night time temperature.

In relation to the increasing trend in air pollution, a close and comprehensive monitoring was carried out from 15th October 2014 to 23rd October 2014. Sampling was done at a temperature range of 19°C to 32°C, relative humidity 41 to 90 m/s and a wind speed of 0.2 to 0.6 m/s. Levels of sulphur oxide, nitrogen oxide and RSPM were very high on the festival day compared to other normal days.



Similar sampling and analysis were carried out on 11th November 2015, the Deepavali day exhibited a decreasing trend in the concentrations of sulphur dioxide and nitrogen dioxide in some of the locations. But the PM10 and PM2.5 levels increased in comparison with the previous years. It was attributed to the adverse meteorological situations like low wind speed and lower night time temperature.

Table 1. Year wise minimum and maximum pollutant level in Delhi
(All values are provided in microgram per cubic meter)

Year	SO ₂	NO ₂	PM10
2010	8-51	34-72	704-1350
2011	4-13	34-78	416-635
2012	13-63	44-85	748-951
2013	11-56	31-52	952-1097
2014	8-32	53-82	442-756
2015	18-80	27-80	100-593
2016	16-110	43-141	100-1297
2017	11-80	47-80	100-706
2018	5-80	44-82	100-1168
2019	5-80	51-80	100-617
2020	4-80	79-101	100-953

(National air quality standard in microgram per cubic meter: SO₂-80, NO₂-80, PM10-100)



On 30th October 2016, concentrations of sulphur dioxide and nitrogen dioxide were found to be within the prescribed limit but higher compared to the previous year. Concentration of both PM10 and PM2.5 exceeded the prescribed limit irrespective of the sampling locations.

The analysis carried out at 19th October 2017 show that the levels of both sulphur dioxide and nitrogen dioxide were within the limit and lesser in some of the regions compared to the year 2016. Values of PM10 and PM2.5 exceeded the normal limit but was less compared to the Deepavali day of 2016.

The CPCB analysis of 7th November 2018 shows high concentrations of both PM10 and PM2.5 irrespective of all the locations. These concentrations were above the prescribed limit as obtained in the previous years. But there was not much variation in the level of sulphur dioxide and nitrogen dioxide even on the Deepavali day. The increased PM10 value was attributed to the adverse climatic conditions like low night time temperature and low wind speed.

Similar air monitoring was carried out on 27th October 2019 in different locations with low night time temperature and low wind speed. Sulphur dioxide concentration was within the range and comparatively less than in the previous year. But the nitrogen dioxide concentration was higher than the prescribed limit in one of the locations. PM10 and PM2.5 values exceeded the limit in all the locations but comparatively less than in the previous year.

The air monitoring carried out at different locations on 9th November 2020 shows higher levels of all the pollutants in some of the locations



compared to the previous year analysis. There were high concentrations of both PM10 and sulphur dioxide in one of the location due to the impact of firecracker bursting. The meteorological conditions were highly favorable for the deterioration of air quality during the analysis.

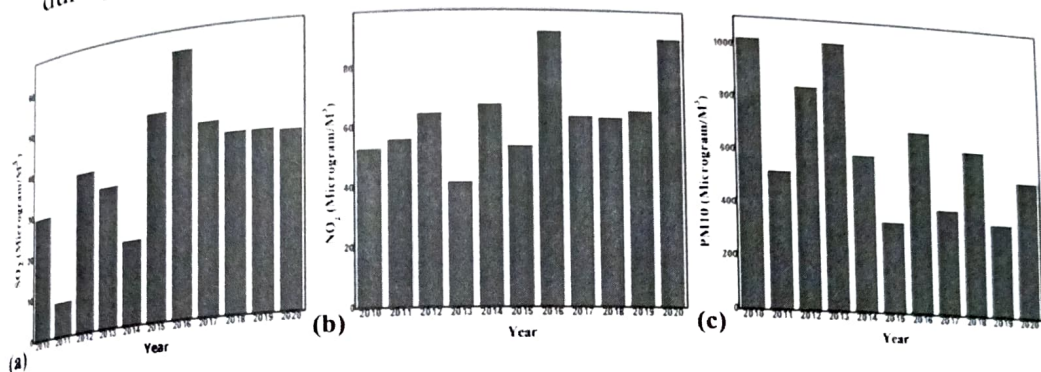


Figure 3. Delhi air pollutant concentration (a) SO₂ (b) NO₂ and (c) PM10 from 2010-2020

Conclusion

Air monitoring data analysis for the last few years in Delhi shows that the situation is still alarming. Even though the authorities are well aware of the alarming situation, the inhabitants of Delhi suffer the shortage of fresh air. The deterioration of air quality is not only of the impact of seasonal celebrations but also the impact of vehicular emissions, stubble burning by farmers of adjacent states along with meteorological conditions. Sulphur dioxide, nitrogen dioxide and respirable particulate matter are the major pollutants of concern in Delhi region. There was a slight decrease in the concentration of sulphur dioxide and PM10 compared to the 2010 situation. But the level of nitrogen dioxide shows continuous increase from 2010 to 2020 and still higher. There was expectation for an improvement in air quality due to covid-19 lock down but on contrary it was still lower.



But reduction in the amount of some of the pollutants may be considered as a relief for the inhabitants. The high concentration of PM10 and PM2.5 is a challenge and should be controlled by proper measures. Source and sector-specific measures should be planned and implement immediately. Other measures like controlling the burning of stubble and other bio-mass, reduction in vehicular emission, implementing new pollution standards, controlling dust and industry and demolition waste reduction should be strictly followed.

References

1. M. L. Cropper, N. B. Simon, A. Alberini, S. Arora, P. K. Sharma, *Am. J. Agric. Econ.* 79 (1997) 1625.
2. X. Ren, *Cambridge J. Reg. Econ. Soc.* 13 (2020) 461.
3. O. F. Althuwaynee, A. L. Balogun, A. Aydda, T. Gumbo, *IOP Conf. Ser. Earth Environ. Sci.* 419 (2020).
4. V. Singh, S. Singh, A. Biswal, A. P. Kesarkar, S. Mor, K. Ravindra, *Environ. Pollut.* 266 (2020) 115368.
5. M. Pathakoti, A. Muppalla, S. Hazra, M. D. Venkata, K. A. Lakshmi, V. K. Sagar, R. Shekhar, S. Jella, S. S. M. V. Rama, U. Vijayasundaram, *Atmos. Chem. Phys.* 21 (2021) 9047.
6. N. Bhalla, J. O'Boyle, D. Haun, *Int. J. Commun.* 13 (2019) 41.
7. G. Beig, M. P. George, S. K. Sahu, A. Rathod, S. Singh, S. Dole, B. S. Murthy, R. Latha, S. Tikle, H. K. Trimbake, R. Shinde, *Curr. Sci.* 119 (2020) 1178.



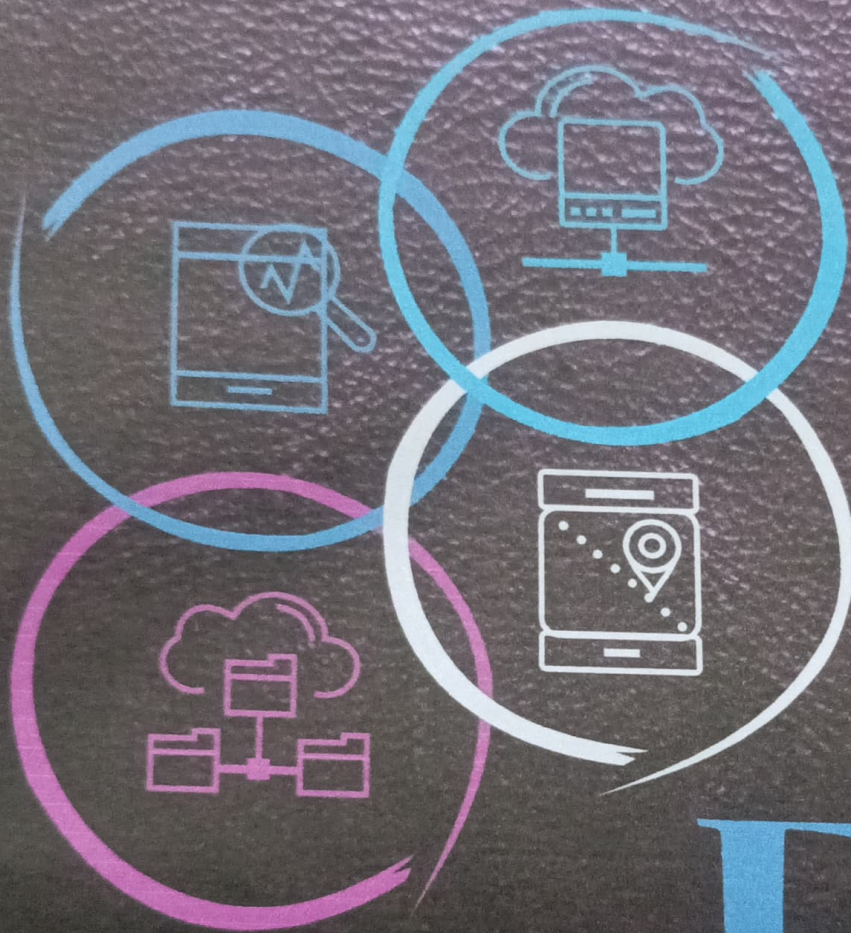
8. R. Sawlani, R. Agnihotri, C. Sharma, P. K. Patra, A. P. Dimri,
K. Ram. R. L. Verma, *Atmos. Pollut. Res.* 10 (2019) 868.
9. C. ENVIS Center, *ENVIS Cent. Control Pollut. Water, Air,
Noise* 26 (2016).at <[http://cpcbenvis.nic.in/envis_newsletter/Air
pollution in Delhi.pdf](http://cpcbenvis.nic.in/envis_newsletter/Air%20pollution%20in%20Delhi.pdf)>



THE MANAGEMENT ACCOUNTANT

ISSN 0972-3528

April 2022 | VOL 57 | NO. 04 | Pages - 124 | ₹ 100



EBM

Evidence-based Management

Journal of

THE INSTITUTE OF COST ACCOUNTANTS OF INDIA
(Statutory Body under an Act of Parliament)

www.icmai.in

Enlisted in UGC-CARE REFERENCE LIST OF QUALITY JOURNALS



SUSTAINABLE HOUSING DEVELOPMENT IN INDIA AND THE NEED FOR EVIDENCE BASED POLICY MAKING: THE ROLE OF CMAs AND AN ACTION PLAN FOR 2030

Abstract

In view of the global agreement 'The 2030 Agenda for Sustainable Development' (2030 Agenda) on the one hand and the national goal 'Affordable Housing for All by 2022' (2022 Goal) applicable to India on the other hand, this article moots for revision of India's 2022 Goal. India's progress in attaining its Affordable Housing (AH) Goal being nowhere near the target, it must be revised in conformity with 2030 Agenda viz. Sustainable Development Goals (SDGs), especially SDG-11 on human settlements. As reliable data and evidence for informed policy decisions are often absent, evidence-based policy making (EBP) is vital. CMAs with their holistic decision making ability can play a key role in the EBP process.

1. INTRODUCTION

'Affordable Housing for All by 2022' (2022 Goal) is India's national housing goal, and schemes like Pradhan Mantri Awas Yojana (PMAY) seek to attain this national goal. But the actual results attained are only 50 per cent of the target, in respect of major PMAY plans, PMAY-Urban [PMAY (U)] and PMAY-Gramin [PMAY (G)], both.

Evidence-based policy making (EBP) is especially relevant in developing nations. (Sutcliffe & Court, 2005) [26]. Due to global pandemic and other macro-economic factors attaining India's 2022 Goal is impossible. In order to really attain this goal and that too qualitatively and meaningfully use of EBP is of crucial significance, as it involves assimilation of data and evidence from multiple sources and their effective use for prudent policy decisions that can trigger social change. CMAs with their unique ability for holistic decision making have a key role to play in an EBP process.

2. AIMS AND METHODOLOGY

This article seeks to (i) study the significance of attaining Affordable Housing (AH) for all in India, impossibility of attaining it in 2022, and the need for extending the target year; (ii) need for aligning India's 2022 Goal with global agreements like 2030 Agenda on the SDGs, the use of EBP in attaining India's AH goal; and also the role of CMAs in the effective EBP adoption in AH sector. The methodology is descriptive-analytical and exploratory. The data used are those from authentic secondary sources like the RBI, NHB, IMF, ADBI etc. and simple tools of statistics have been used



Dr. Manoj P K
Faculty Member & Research Co-ordinator
Department of Applied Economics, CUSAT
Kochi
manoj_p_k2004@yahoo.co.in



Dr. Mini Joseph
Head
P.G Dept. of Commerce & Research Centre
KG College, Kottayam
minijskc@gmail.com



for data analysis.

3. HOUSING IN INDIA: A GLOBAL OUTLOOK

In the backdrop of the ongoing global pandemic of Covid-19, it is meaningful to look into the global housing scenario. It is noted that the pandemic has not affected the housing prices; rather housing prices have been on the rise even during pandemic days. Based on the data for 84 Quarters (21 years) viz. 2000 Q1 to 2020 Q4, there has been an obvious rising trend and that too with a high R^2 value of 84.8 percent. (IMF Data) [1]. (Figure I).

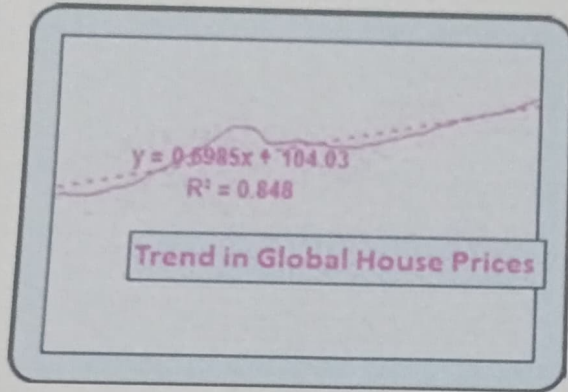


Figure I: Global House Prices.

Source: IMF data (www.imf.org) [1]

As of Q4-2020, house prices have been rising across the globe and 52 out of the total 58 countries have registered rise in house prices. Only the rest 6 countries have registered fall in house prices, these being Indonesia, Peru, Serbia, Philippines, India, UAE. The highest rise is in Luxembourg (17.18 per cent) and the highest fall is in UAE (-4.45 per cent). India's fall in house price (-3.56 per cent) is second only to that of UAE. Among the BRIC nations, India is the only nation with fall in prices, as per IMF data. [1]. (Figure II).

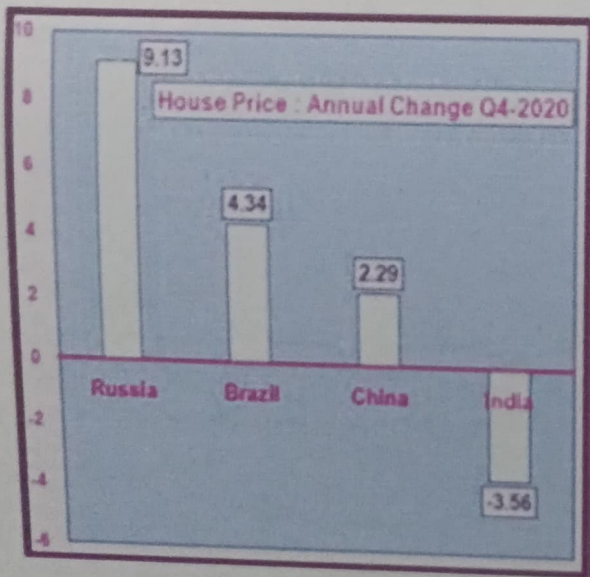


Figure II: House Prices-BRIC Nations.

Source: IMF data (www.imf.org) [1]

GOI's policy of promoting housing and attaining the 2022 Goal still continues, and its new Budget for 2022-2023 (Feb.2022) too seeks to promote housing. The fact is that the actual number of houses constructed under the urban scheme viz. PMAY(U), launched on 25th June 2015, as of 12th Dec. 2021 is 53 lakhs, against 1.14 Crore houses sanctioned, i.e. 46.49 per cent completed, as per the data of PIB, GOI (2022) [28]. Under the rural (Gramin) scheme viz. PMAY (G) as against 2.95 Crore houses planned only 1.65 Crore houses are completed, i.e. 55.93 per cent is completed. (GOI, 2022) [3]. In short, the progress of PMAY as a whole is roughly 50 per cent as of Dec.2021. It is noted that an extension of the deadline from 2022 is imminent. In respect of PMAY (G) the GOI has extended the target year to 2024 from 2022, on an *ad hoc* basis. PMAY (U) too will have to be extended further from 2022.

3. INDIAN HOUSING SECTOR: NEED FOR EBP

Housing sector in India can act as growth engine for the whole economy owing to its extensive linkage effects, both forward and backward, with nearly 350 other industries, and with 21 sectors its linkage is very close, like, cement, transport etc. (Figure III) [4].

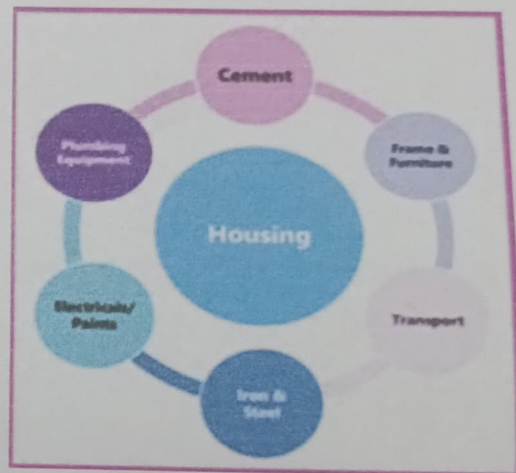


Figure III: Linkages of Housing.

Source: GOI (2021), MHUA. [4]

Close linkage effects of housing with 21 key sectors enable housing investments to create substantial and growing levels of direct and indirect employment every year. The case of PMAY(U) is as reflected in Figure IV.[4]

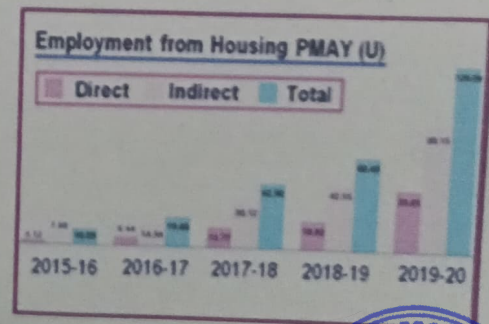
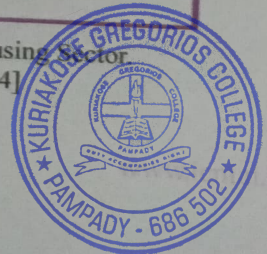


Figure IV: Employment in Housing Sector

Source: GOI (2021), MHUA. [4]



REVIEW



Cite this: *Org. Biomol. Chem.*, 2021, **19**, 7995

Received 11th July 2021,
Accepted 20th August 2021

DOI: 10.1039/d1ob01352a

rsc.li/obc

Current developments in the synthesis of 4-chromanone-derived compounds

Elizabeth J. Diana,^{a,b} U. S. Kanchana^a and Thomas V. Mathew  ^{*,a}

The chroman-4-one framework is a significant structural entity that belongs to the class of oxygen-containing heterocycles. It acts as a major building block in a large class of medicinal compounds, and synthetic compounds exhibit a broad variety of remarkable biological and pharmaceutical activities. Several studies have been performed to improve the methodologies of 4-chromanone-derived compounds. This review focuses on the major synthetic methods of preparation reported on chroman-4-one derivatives from 2016 to 2021.

1. Introduction

Phytochemicals are non-nutritive plant chemicals, including chromones,¹ coumarins,² chalcones,³ carotenoids⁴ and flavonoids,⁵ showing great biological activities in preventing diseases in humans. 4-Chromanone-derived compounds (2,3-dihydro-1-benzopyran-4-one) and their research are of immense significance in the area of pharmaceutical chemistry, as they play an important role as building blocks in designing drugs.^{1,6} They exhibit a broad range of biological and pharmaceutical activities such as antibiotic,⁷ antiparasitic,⁸ anticancer,^{9,10} and anti-HIV¹¹ activities and act as SIRT2 inhibitors.¹² Chroman-4-ones showed large structural varieties owing to the presence of different kinds of compounds like flavanones,¹³ isoflavones,¹⁴ spirochromanones,¹⁵ benzylidene-4-chromanones¹⁶ *etc.* Flavanones¹⁷ are 2-phenyl chroman-4-one derivatives including various biologically important, natural compounds like sakuranetin,¹⁸ naringin,¹⁹ eriodictyol,²⁰ hesperetin²¹ and sterubin.²² Phytoestrogen isoflavones²³ like genistein,²⁴ daidzein,²⁵ glycitein,²⁶ biochanin A,²⁷ and formononetin²⁸ play a significant role in the medicinal field, regarded as chemoprotective agents, and hence have been widely used in cancer treatment, menopausal symptoms, and osteoporosis. There are different methods established for the preparation of these structural motifs in previous years,^{29,30} though some classical approaches have drawbacks like multi-step procedures, harsh reaction conditions, less substrate scope *etc.* So, still many research studies are on-going for introducing more efficient and atom-economical methods to con-

struct these privileged scaffolds under mild and environmentally benign conditions. This review focuses on the novel synthetic approaches of chroman-4-one derivatives and covers the literature from 2016 to 2021, since the topic has been reviewed in 2015 by Emami and Ghanbarimasir.²⁹ For effortlessness and simplicity, the topic is grouped on the basis of the methods of synthesis involved.

2. Synthesis of chroman-4-one derivatives

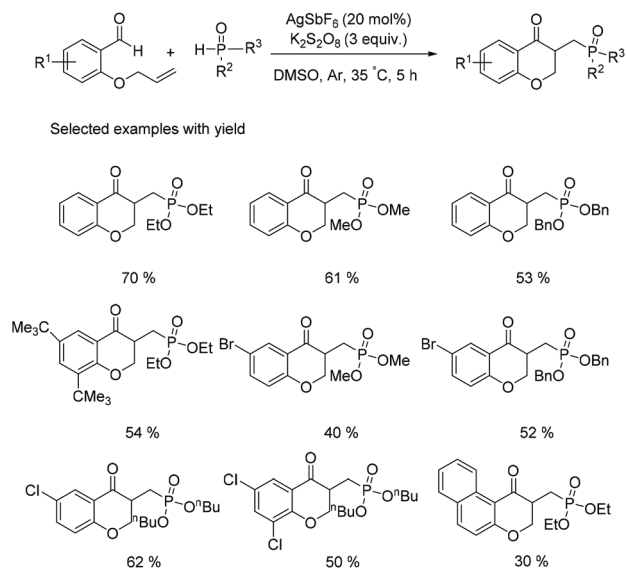
2.1. Synthesis of chroman-4-one derivatives through cascade radical cyclization

The methods of organic synthesis have progressed promptly. In the last few decades, great efforts have been focussed on organic synthesis including cross-coupling reactions,^{31–36} functional group interconversions (FGIs)^{37,38} and cascade radical cyclization reactions^{39–41} which offer a valuable synthetic method in organic synthesis. The prominent advantages of radical cascade reactions include high efficiency, environmentally benign nature, economical protocols and great reduction of time duration to complete the work. Recently, in 2020, Xiong *et al.*⁴² reviewed 3-substituted chroman-4-ones by radical reaction. Currently, chroman-4-one derivatives synthesised through cascade reactions with *o*-(allyloxy) arylaldehydes as the initial material through a radical process have gained considerable attention.

In 2016, Zhao *et al.* put forward a direct approach to synthesise phosphonate chroman-4-ones by a cascade radical cyclization-coupling reaction between dialkyl phosphites and 2-(allyloxy)arylaldehydes using silver hexafluoroantimonate(v) as the catalyst and potassium persulfate as an oxidant in DMSO at 35 °C under an argon atmosphere for 5 hours (Scheme 1).⁴³ Various dialkyl phosphites underwent cascade

^aDepartment of Chemistry, St. Thomas College Pala, Arunapuram P.O., Kottayam, Kerala, 686574, India. Fax: + 91-4822-216313; E-mail: majothomas@gmail.com, majothomas@stcp.ac.in

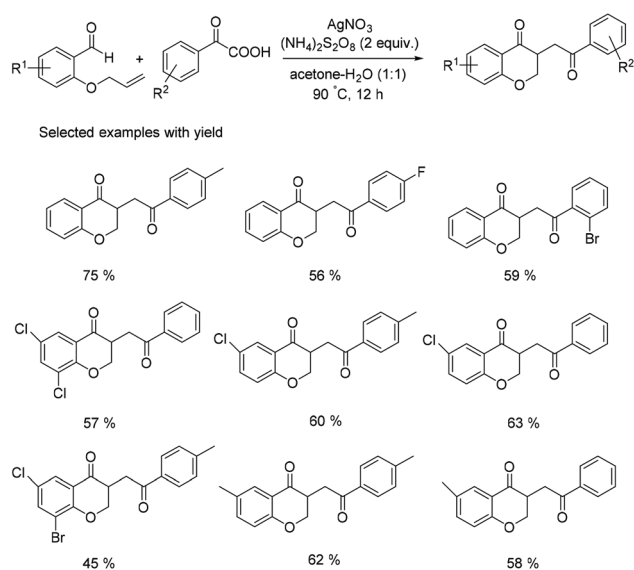
^bDepartment of Chemistry, Alphonso College Pala, Arunapuram P.O., Kottayam, Kerala, 686574, India. E-mail: dianakeelathu@gmail.com



Scheme 1 AgSbF₆ catalyzed cascade radical cyclization-coupling between dialkyl phosphites and 2-(allyloxy)arylaldehydes.

transformations and afforded the desired product with 53–70% yield. Unluckily, diphenylphosphine oxide and diphenyl phosphonate failed to give the product. The yield of the reaction was about 32–70% and either electron-rich or electron-deficient 2-(allyloxy)arylaldehydes were successfully employed in this reaction.

A novel method for the synthesis of chroman-4-one derivatives *via* AgNO₃-catalyzed cascade decarboxylation followed by oxidative cyclization has been proposed in 2017 by Yang and co-workers from *o*-(allyloxy)arylaldehydes with α -oxocarboxylic acids with ammonium persulfate as an oxidant in acetone/H₂O (1:1) as solvent at 90 °C for 12 hours (Scheme 2).⁴⁴



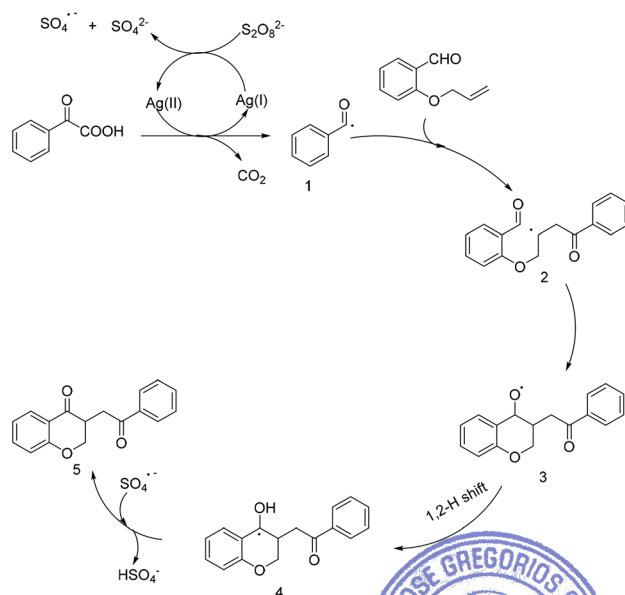
Scheme 2 Synthesis of chroman-4-one derivatives through AgNO₃-catalyzed cascade decarboxylation followed by radical cyclization.

α -Oxocarboxylic acids or *o*-(allyloxy)arylaldehydes with weak electron effect groups, which were electron-withdrawing or electron-donating substituents, provided the required products with moderate to fair yields. Also, it was moderately unresponsive to the steric effect. α -Oxocarboxylic acids with strong electron-withdrawing substituents (CF₃, CN, and NO₂) almost failed to undergo the reaction.

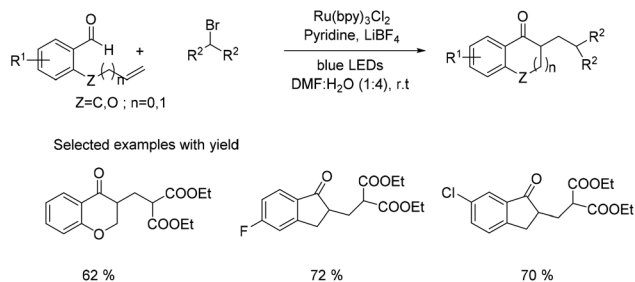
Here *o*-(allyloxy)arylaldehydes act as radical acceptors and the mechanism is shown in Scheme 3. Primarily Ag(I) is oxidised to Ag(II) by persulfate anions and this leads to the formation of the acyl radical **1**. This acyl radical reacts with the C=C of *o*-(allyloxy)arylaldehydes to form an intermediate **2**. Successive radical attack led to the alkoxy radical **3**, and subsequently a 1,2 shift generated the benzyl radical **4**. In the last step, hydrogen from **4** was taken up by the sulfate radical anion leading to the formation of the final product **5**.

In the same year, Lu and team put forward visible light-driven photoredox catalyzed synthesis of various cyclic ketones like chroman-4-ones, indanones, cyclopentenones and 3,4-dihydronaphthalen-1(2*H*)-ones from alkenyl aldehydes with activated bromides like α -bromocarbonyls (Scheme 4).⁴⁵ The reaction proceeded through tandem radical addition–cyclization reaction and carried out using tris(bipyridine) ruthenium(II) chloride as a photocatalyst, pyridine as a base and lithium tetrafluoroborate (LiBF₄) as an additive in DMF/H₂O(1:4) at 25 °C for 24 hours. The synthesis of chroman-4-one was exemplified with various other cyclic ketones.

Jung Kim and Hong, in 2017, synthesised spiroepoxy chroman-4-ones using visible light driven radical cyclization and epoxidation from *o*-(allyloxy)arylaldehydes using Ru(bpy)₃Cl₂·6H₂O as a photocatalyst and *tert*-butyl hydroperoxide (TBHP) and K₂CO₃ as a base in isopropyl acetate (*i*-PrOAc) at



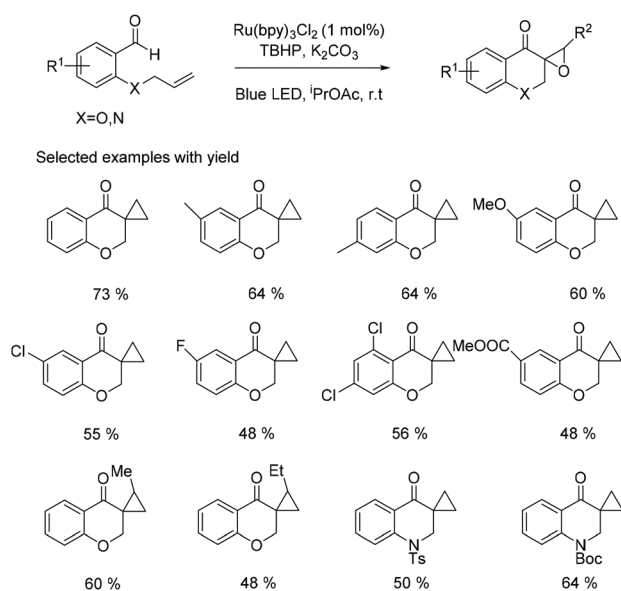
Scheme 3 Synthesis of chroman-4-one derivatives by the AgNO₃-catalyzed cascade radical decarboxylative cyclization process – proposed mechanism.



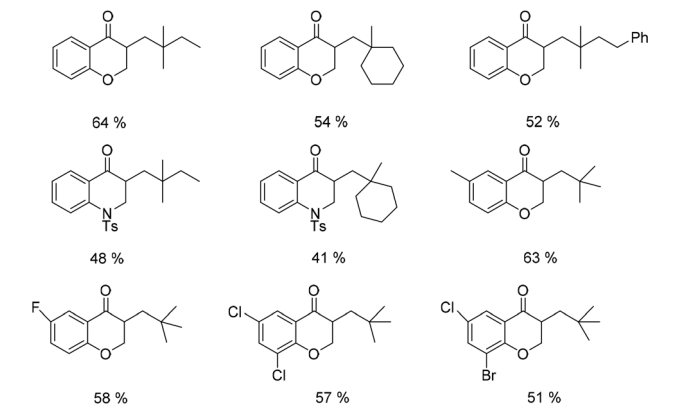
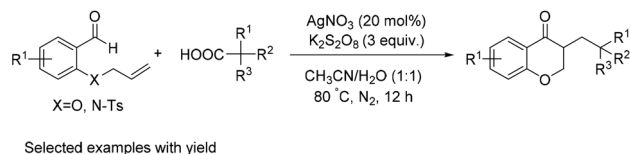
Scheme 4 Synthesis of cyclic ketones from alkenyl aldehydes with α -bromocarbonyls via a tandem radical addition–cyclization reaction.

room temperature under N_2 for 24 hours with irradiation from a blue LED (Scheme 5).⁴⁶ Moderate to good yields of spiroepoxy chroman-4-one scaffolds were effortlessly obtained from *o*-(allyloxy)arylaldehydes with both electron-rich and electron-deficient substituents at room temperature. Also, allylamino-compounds gave spiroepoxy enaminone products with moderate yields. Acyl radicals are generated by the visible light-induced reaction leading to intramolecular radical cyclization followed by epoxidation.

Later, in 2018, the synthesis of 3-alkyl-substituted chroman-4-one scaffolds by silver nitrate catalyzed oxidative decarboxylative cascade radical cyclization of *o*-(allyloxy)arylaldehydes with tertiary carboxylic acids was presented by Hu *et al.* (Scheme 6).⁴⁷ The reaction was performed under mild reaction conditions using 3 equivalents of $K_2S_2O_8$ as an oxidant using a 1:1 ratio of CH_3CN/H_2O solvent at 80 °C under a nitrogen atmosphere. The yield of the reaction was about 43–74% and *o*-(allyloxy)arylaldehydes with electron-withdrawing or electron-donating substituents successfully participated. Various cyclic and acyclic tertiary alkyl carboxylic acids gave moderate to



Scheme 5 Synthesis of spiroepoxy chroman-4-one scaffolds via a visible light enabled tandem radical approach.



Scheme 6 Silver nitrate catalyzed oxidative decarboxylative cascade radical cyclization for the preparation of chroman-4-one scaffolds.

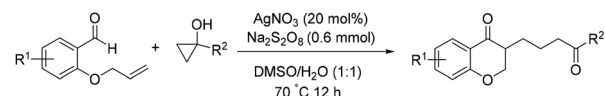
good yields of products with *o*-(allyloxy)arylaldehydes and their *N*-tosyl substituted analogues. However, the reaction was unable to proceed with 1° and 2° carboxylic acids.

During the same year, a similar team developed a new and suitable silver-catalyzed radical cascade cyclization protocol for the preparation of a large range of 1,5-/1,3-dicarbonyl heterocycles and related polyheterocycles, namely, a chroman-4-one, 2,3-dihydroquinolin-4(1H)-one or indanone moiety (Scheme 7).⁴⁸ 2-(Allyloxy)benzaldehyde reacted well with 1,3-dicarbonyl compounds in the presence of silver nitrate and potassium persulfate in DMSO at 40 °C for 24 hours. Electron-

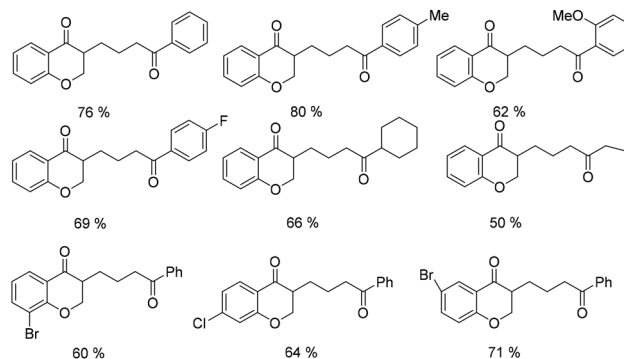
withdrawing and electron-donating substituents in *o*-(allyloxy) benzaldehyde were well tolerated and gave moderate to good yield of the product (48–73%). In addition to this, 2-allyl benzaldehyde and 2-*N*(Ts)CH₂–CH=CH₂ substituted benzaldehyde on reaction provided 1,5-/1,3-dicarbonyl containing indanones and 2,3-dihydroquinolin-4(1*H*)-ones. Using these synthesised 1,5-/1,3-dicarbonyl containing heterocycles as the starting material, more structurally complex polyheterocycles could be employed economically for the reaction with NH₄OAc, NH₂OH·HCl and PhNHNH₂.

The suggested mechanism is shown in Scheme 8. In the first step, peroxydisulfate oxidised silver from the +1 oxidation state to +2, and it generated the silver ion complex **6** with 1,3-dicarbonyl compounds. The silver ion complex **6** gave the dicarbonyl radical **7** via intramolecular electron transfer, and it led to cascade cyclization reaction with *o*-(allyloxy)benzaldehyde generated followed path I and generated 1,5-/1,3-dicarbonyl-containing chroman-4-one product **8**. Path II followed another route in which the aldehydic group in *o*-(allyloxy)benzaldehyde underwent reaction to produce acyl radicals leading to the formation of 3-methyl-4*H*-chromen-4-one **9** as the by-product.

In 2019, Sheng and team proposed another novel synthesis method for an alkyl substituted chroman-4-one derivative via silver-catalyzed cascade radical cyclization between 2-(allyloxy) arylaldehydes and cyclopropanols using Na₂S₂O₈ as an oxidant in DMSO/H₂O(1 : 1) solvent at 70 °C for 12 hours (Scheme 9).⁴⁹ 2-(Allyloxy)arylaldehydes were successfully employed in this reaction with good functional group tolerance. Also, phenyl-substituted tertiary cycloalkanols with electron-donating or electron-withdrawing substituents effectively delivered moderate to good yield of the product. Heterocyclic substituted cyclopropanols and alkyl substituted cyclopropanols also underwent effective reactions. Cyclobutanol and cyclopentanol



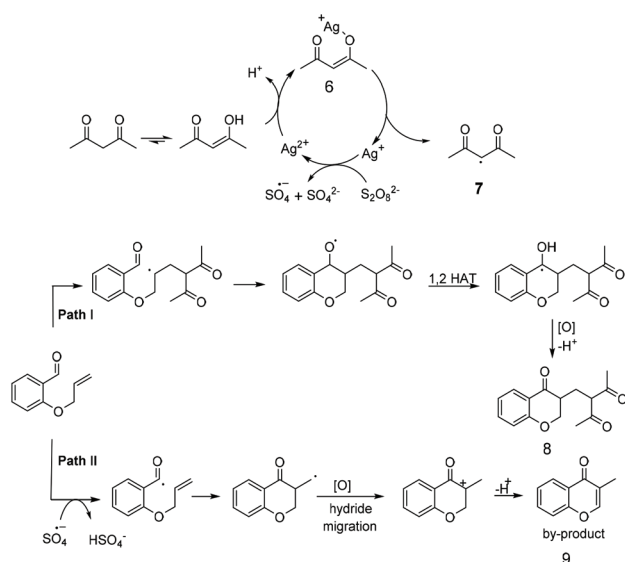
Selected examples with yield



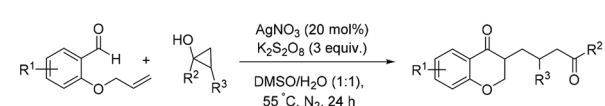
Scheme 9 Silver-catalyzed cascade radical cyclization for the preparation of alkyl substituted chroman-4-one derivatives.

systems were not appropriate for the cascade radical cyclization reaction, revealing the inevitability of three-membered rings for the reaction.

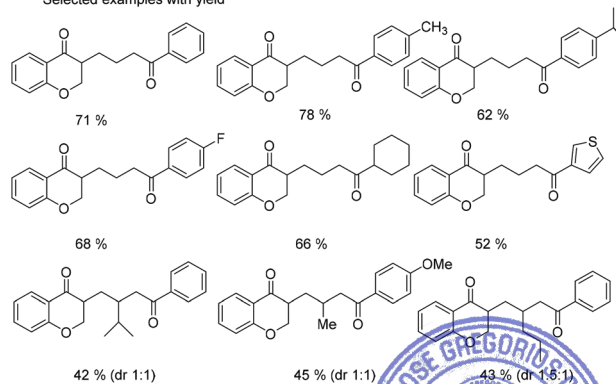
In 2019, a similar protocol was developed by Liu and co-workers for chroman-4-one and indanone derivatives from tertiary cyclopropanol with 2-(allyloxy)benzaldehyde by a silver catalyzed radical ring-opening/coupling/cyclization cascade (Scheme 10).⁵⁰ It was conducted under mild reaction conditions using silver nitrate as a catalyst and potassium persulfate as an oxidant in DMSO/H₂O (1 : 1) solvent at 55 °C under a N₂ atmosphere for 24 hours. Aryl substituted cyclopropanols having electron-donating and electron-withdrawing substituents smoothly underwent the reaction with 2-(allyloxy)benz-



Scheme 8 Suggested mechanism for silver-catalyzed radical cascade cyclization.



Selected examples with yield

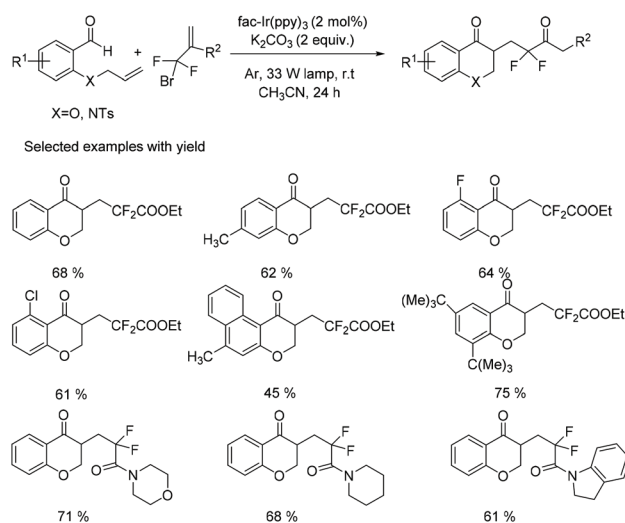


Scheme 10 Preparation of 4-chromanones by silver catalyzed radical ring opening accompanied by coupling followed by a cyclization cascade.

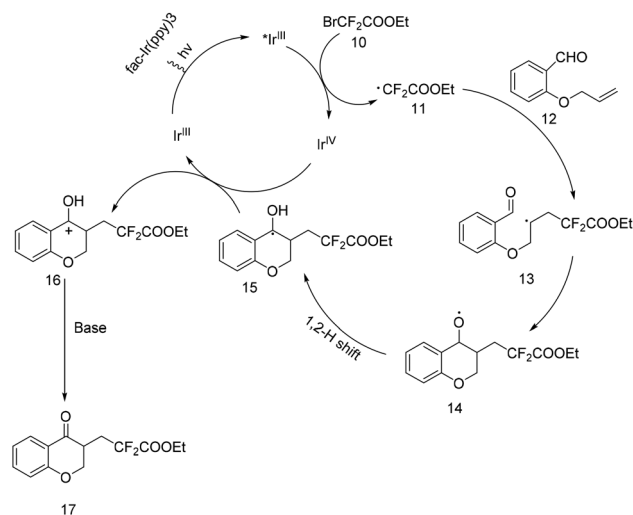
aldehyde, providing the desired product in moderate to good yield. Also, cyclopropanol with a heteroaryl substituent or an aliphatic substituent successfully gave the product. 2-(Allyloxy) benzaldehyde with electron-donating groups effectively gave the product compared to that with electron-withdrawing groups. Using the same strategy, the synthesis of indanone derivatives was carried out using 2-allylbenzaldehyde with cyclopropanols. The catalytic mechanism involved the silver-catalyzed radical ring opening of tertiary cyclopropanol radicals accompanied by an intermolecular coupling with 2-(allyloxy)benzaldehyde and the following cyclization process.

During the same period, Zhou and colleagues successfully introduced an effective technique for the preparation of difluoroacetylated chroman-4-ones (Scheme 11).⁵¹ *o*-(Allyloxy) arylaldehydes with difluoro reagents underwent the reaction through visible-light photocatalytic radical cyclization. The reaction was performed under mild reaction conditions in which *fac*-Ir(ppy)₃ was used as a photocatalyst with a base K₂CO₃ in CH₃CN solvent under an argon atmosphere for 24 hours at room temperature. The reaction was independent of the nature and position of substituents in the phenyl ring of both reactant species and gave moderate yields of products (54%–68%). Various difluoro reagents effectively underwent the reaction with moderate to good yields of difluoroacetylated chroman-4-ones.

A reasonable mechanism was suggested (Scheme 12). At first, the excited state *Ir^{III} was generated through visible light irradiation from the photocatalyst. Subsequently, *Ir^{III} reacts with **10** to produce the Ir^{IV} species and a radical **11** is formed. Radical **11** was added to C=C of **12** to produce the intermediate **13**. Afterward, through rapid intramolecular cyclization, **13** converted to the intermediate **14**, and consequently a 1,2-H shift generated the radical **15**. Radical **15** produced carbocation **16** *via* single-electron-transfer with the Ir^{IV} species. Finally, through deprotonation, **17** was generated from **16**.

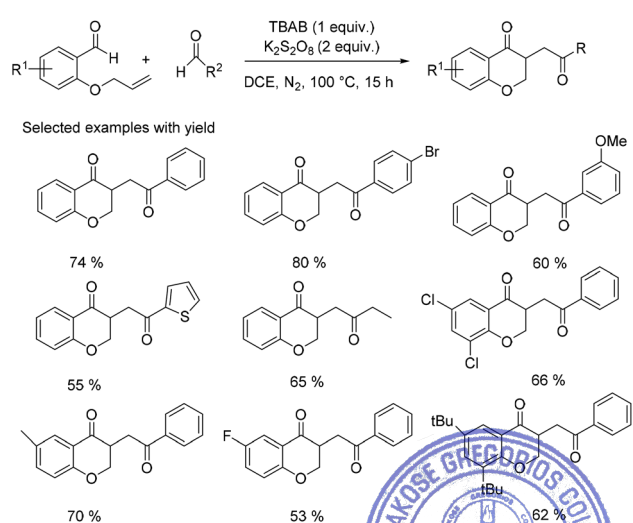


Scheme 11 Difluoroacetylated chroman-4-ones synthesised from *o*-(allyloxy)aryl-aldehyde *via* visible light-driven difluoroacetylation.



Scheme 12 Possible reaction mechanism for the visible-light-driven difluoroacetylation of *o*-(allyloxy)aryl-aldehydes.

An oxidative radical addition–cyclization reaction of aryl or aliphatic aldehydes with 2-(allyloxy)arylaldehydes for the synthesis of chroman-4-one derivatives was proposed by Xiao and team in 2019 under metal-free conditions. They were synthesised using a catalytic amount of tetrabutyl ammonium bromide (TBAB) and potassium persulfate (K₂S₂O₈) as an oxidant in dichloroethane (DCE) solvent under an N₂ atmosphere at 100 °C (Scheme 13).⁵² Aryl aldehydes with electron-withdrawing groups afforded the desired chroman-4-one derivatives in 62–80% yields, whereas electron-donating substituents gave slightly lesser yield of the product (58–66%). However, CN and NO₂ groups failed to undergo the reaction. Hetero-arylaldehydes and aliphatic aldehydes were smoothly involved in the cascade reaction and resulted in appreciable yield of the required products. Also, the cascade radical cycli-

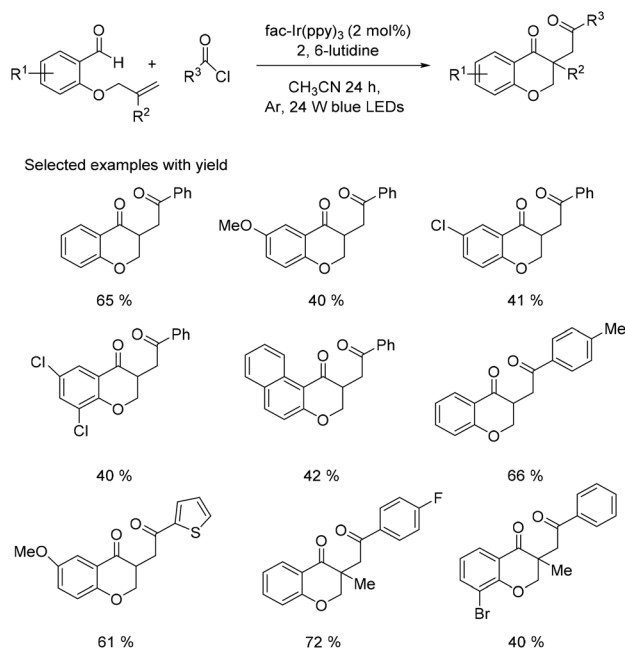


Scheme 13 Chroman-4-one derivatives synthesised through cascade radical cyclization.

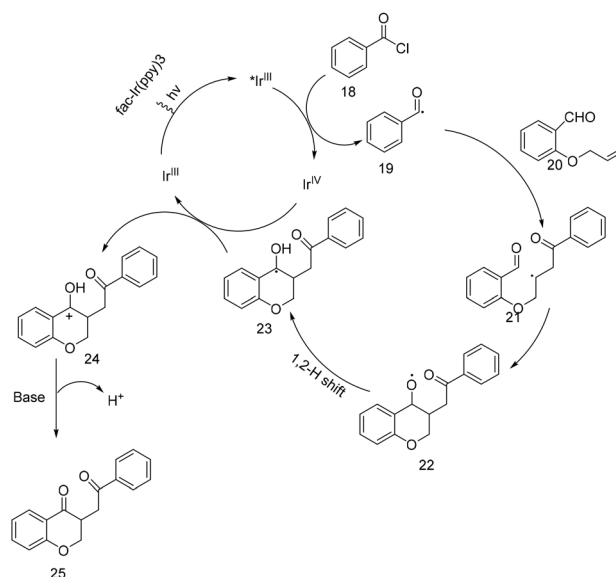
zation of 2-(allyloxy)arylaldehydes with electron-rich or electron-deficient substituents with aldehydes provided good yields of products.

In a subsequent study, in 2019, He *et al.* explored a strategy for the preparation of diketones having chroman-4-one frameworks (Scheme 14).⁵³ This could be achieved by the visible light promoted cascade radical cyclization of 2-(allyloxy)-benzaldehyde with aroyl chlorides using the photoredox catalyst *fac*-Ir(ppy)₃ with the 2,6-lutidine base in degassed CH₃CN for 24 hours under an argon atmosphere at normal room temperature. 2-(Allyloxy)-benzaldehyde with various substituents, irrespective of its nature, was well tolerated and gave appropriate results with 40–50% yields. At the same time, aroyl chloride with electron-donating and weak electron-withdrawing groups gave good yield of the desired product with 2-(allyloxy)-benzaldehyde, but groups like CN and NO₂, which are strongly electron withdrawing in nature, failed to give the product.

A possible mechanism suggested by the authors is discussed in the Scheme 15. Firstly, the catalyst *fac*-Ir(ppy)₃ changed to its photoexcited state by photo-irradiation. The benzoyl radical **19** is formed from benzoyl chloride **18** and here Ir^{III}* changed to the Ir^{IV} species. Then, the addition of benzoyl radicals with the carbon-carbon double bond of 2-(allyloxy)-benzaldehyde **20** resulted in radical **21**. Then, radical **21** generated oxygen-centered radical **22** via an intramolecular radical addition followed by radical **23** being formed by 1,2-hydrogen migration of **22**. This could act as a reductant to reduce Ir^{IV} to Ir^{III}, leading to completion of the photoredox catalytic cycle and formation of the radical **24**. Finally, the chroman-4-one product was generated by base-promoted deprotonation of **25**.

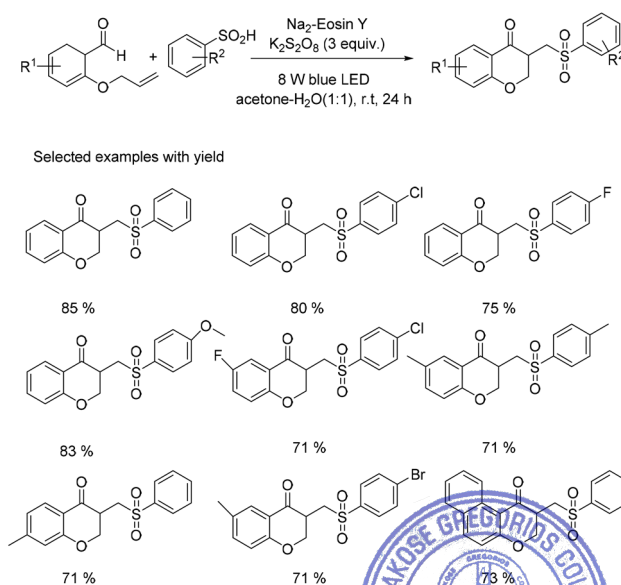


Scheme 14 Preparation of diketones possessing chroman-4-one from 2-(allyloxy)-benzaldehyde with aroyl chlorides.



Scheme 15 The proposed mechanism for the preparation of 1,4-diketones containing a 4-chromanone framework.

In 2020, Li and team put forward a practical and efficient approach for the preparation of sulfonated 4-chromanones by visible light irradiated cascade radical cyclization of *o*-(allyloxy) arylaldehydes with sulfinic acids at room temperature (Scheme 16).⁵⁴ The reaction proceeds with Na₂-Eosin Y as a catalyst and K₂S₂O₈ as an oxidant under the irradiation of an 8 W blue LED for 24 hours in acetone : H₂O (1 : 1) solvent. Both electron-withdrawing and electron-donating substituents on the phenyl rings of sulfinic acids were suitable partners in this process, providing the required products in good to excellent yields (70–85%). Also, regardless of the nature of substituents,

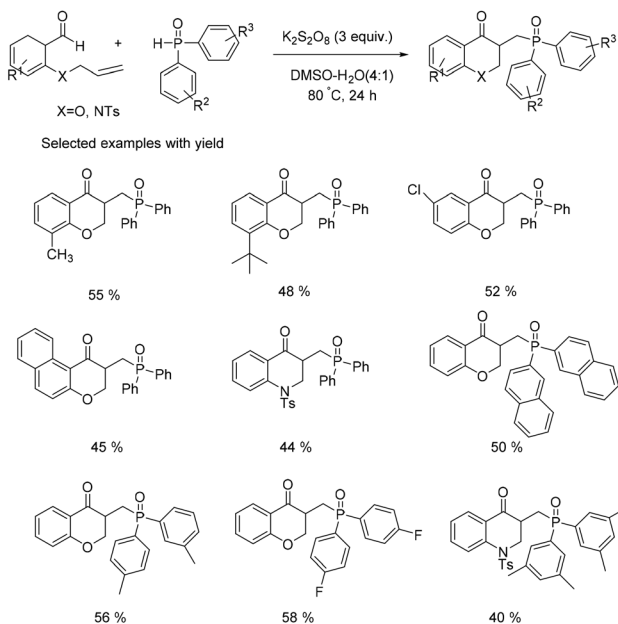


Scheme 16 Preparation of sulfonated 4-chromanones by visible-light-induced cascade radical cyclization.

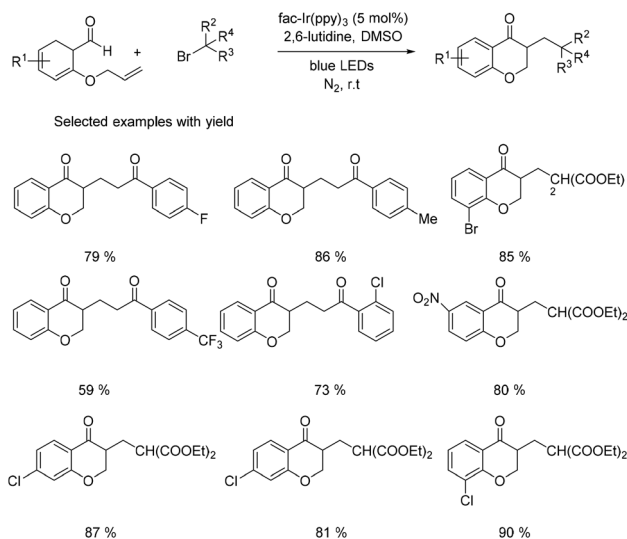
o-(allyloxy)arylaldehydes were successfully employed in this reaction.

In the same year, a practical and an environment friendly procedure for the preparation of phosphine oxide-functionalized 4-chromanones was suggested by Liu and co-workers by a radical cascade transition-metal-free phosphinoylation/cyclization procedure (Scheme 17).⁵⁵ They were synthesised from diphenylphosphine oxides and *o*-(allyloxy)arylaldehydes with $K_2S_2O_8$ as the oxidant in DMSO/H₂O (4 : 1) as solvent at 80 °C. Irrespective of the nature of substituents, diphenylphosphine oxides and *o*-(allyloxy)arylaldehydes gave moderate yields of the desired products. But *o*-(allyloxy)benzaldehyde with nitro substituents failed to give the product. Diethyl or dimethylphosphine oxides also were not suitable for this cascade cyclization protocol. The reaction followed a radical phosphinoylation–cyclization cascade, which proceeds through C–P and C–C bond formation.

In 2020, Huang and co-workers introduced the green preparation of 3-substituted 4-chromanones and 2,3-dihydroquinolin-4(1*H*)-ones from alkenyl aldehydes with activated bromides by a visible-light photoredox catalysis protocol (Scheme 18).⁵⁶ The synthesis was conducted under an N₂ atmosphere at room temperature with the treatment of 5 W blue LEDs using *fac*-Ir(ppy)₃ as a photocatalyst with a 2,6-lutidine base in DMSO solvent for 30 hours. The aryl group in 2-(allyloxy)arylaldehydes bearing an electron-donating or electron-withdrawing group gave moderate to excellent yield of the product. Nitrogen substituted alkenyl aldehydes provided the desired 2,3-dihydroquinolin-4(1*H*)-ones with decent yields (61–80%). Primary, secondary and tertiary- α -carbonyl alkyl bromides with electron-rich substituents showed slightly more yield compared with electron-deficient substituents, even though both per-



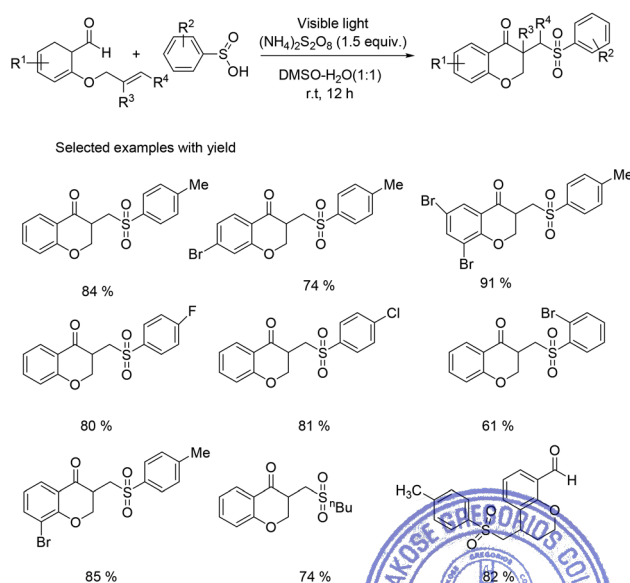
Scheme 17 Synthesis of phosphine oxide-functionalized 4-chromanones through a radical phosphinoylation–cyclization cascade.



Scheme 18 Preparation of 3-substituted 4-chromanones via visible-light-promoted cascade radical cyclization.

formed well and provided the respective 1,2-acylalkylation products (59–86%). Secondary- and tertiary- α -bromoalkyl esters were also tolerated well in this reaction and gave good yield of the product.

More studies have been performed in 2020; Mei and team developed a practical protocol for the preparation of sulfone-substituted chroman-4-one sulfones via a visible-light-irradiated radical cascade cyclization of arylsulfonic acids with *o*-(allyloxy)arylaldehydes and *o*-(homoallyloxy)arylaldehydes (Scheme 19).⁵⁷ The reactions were carried out at room temperature for 12 hours in the presence of $(NH_4)_2S_2O_8$ as an oxidant and DMSO/H₂O(1:1) as solvent at 410–415 nm.

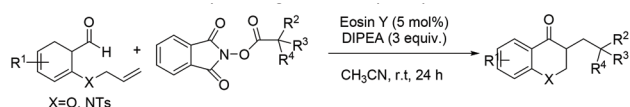


Scheme 19 Synthesis of sulfone-substituted 4-chromanone sulfones via visible-light-irradiated radical cascade cyclization.

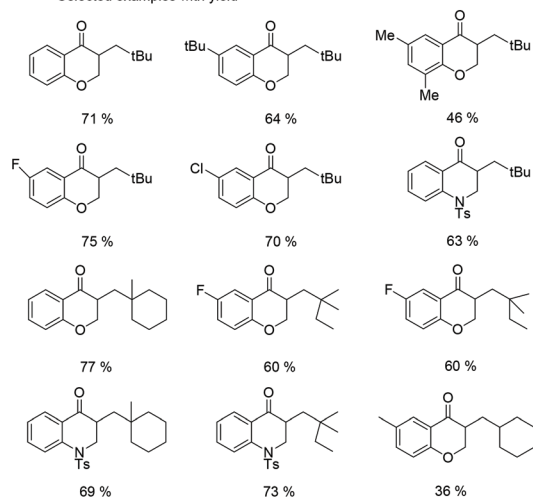
Notably, *o*-(allyloxy)arylaldehydes with both electron-rich and electron-deficient substituents were found to be suitable partners, providing the corresponding products in good to outstanding yields (41–90%). Aryl sulfinic acid with a substituent at the *para* position of the aromatic ring showed good yield (72–81%) of the product compared to that with an *ortho* substituent (61–65%) and aliphatic sulfinic acid also provided good yield (74%) of the product. But 2-(but-3-en-1-yloxy)-benzaldehyde with a long side chain reacted with sulfinic acid providing the sulfone-functionalized product.

Yet again in 2020, Das *et al.* implemented an attractive plan for the preparation of 3-alkylated 4-chromanone scaffolds by visible light induced radical annulation of 2-(allyloxy)arylaldehydes with redox-active *N*-(acyloxy)phthalimides (NHPI esters) using 5 mol% of eosin as the photocatalyst and *N,N*-diisopropylethylamine (DIPEA) (3 equivalents) as the base in CH₃CN solvent under blue LED irradiation (440 nm) under an argon atmosphere for 24 hours at room temperature (Scheme 20).⁵⁸ Irrespective of the nature of substituents, 2-(allyloxy)arylaldehydes provided moderate to good yields of products. Various cyclic and acyclic tertiary radicals derived from NHPI esters underwent radical annulation with 2-(allyloxy)arylaldehydes and their *N*-tosyl substituted analogues, providing good yield of the product. But in the radical cascade process, NHPI esters derived from secondary carboxylic acids showed a reduced reactivity. Due to less stability, primary NHPI esters did not provide the corresponding cross-coupled product.

Again in 2020, another effective synthetic method for functionalised chroman-4-ones from 2-(allyloxy)arylaldehydes with sodium sulfinite *via* cascade radical cyclization using AgNO₃ as a catalyst and potassium persulfate as an oxidant in DMF/



Selected examples with yield



Scheme 20 Preparation of 4-chromanones with a 3-alkyl substituent by visible light induced radical annulation.

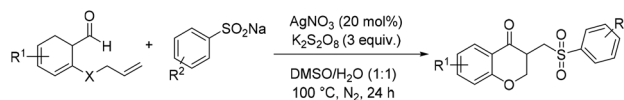
H₂O (1:1) solvent was developed by Han and associates (Scheme 21).⁵⁹ *O*-(Allyloxy)arylaldehydes afforded good yields (63–75%) of functionalised chroman-4-ones, irrespective of the nature of substituents with sodium sulfinite. Electronic and steric effects were not prominent for this reaction.

2.2. Synthesis of chroman-4-one derivatives *via* hydroacylation

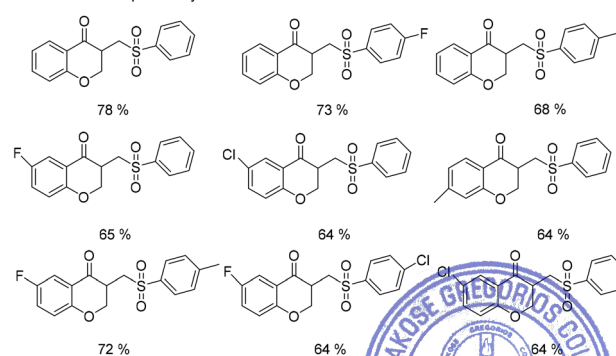
Transition-metal-catalyzed hydroacylation of aldehydes to alkenes or alkynes is a considerable approach for preparing a variety of ketones including heterocyclic ketones.^{60,61} Many studies have been performed for the synthesis of chroman-4-ones by hydroacylations of activated alkynes with aldehydes and the subsequent oxo-Michael addition.^{62,63}

In 2015, Du and M. Stanley introduced a one-pot preparation of 2,3-disubstituted chroman-4-ones *via* a rhodium catalyzed tandem hydroacylation of 1,2-disubstituted alkynes with substituted salicylaldehydes, and afterwards an intramolecular oxo-Michael addition with good diastereoselectivity (Scheme 22).⁶⁴ The reaction was carried out using [Rh(COD)Cl]₂ and 1,1'-bis(diphenylphosphine)ferrocene (dppf), with CsF as a base and MeCN as a solvent at 100 °C. 1,2-Diarylacetylenes with a bulky or electron neutral aryl group gave more than 5 : 1 diastereomeric ratios preferring the *trans*-isomer. At the same time, 1,2-diarylacetylenes with strong electron-withdrawing, electron-donating and *meta*-substituted aryl groups gave modest *trans:cis* diastereoselective products (2.0–3.1 : 1). However, salicylaldehydes with electron-rich or electron-deficient substituents gave good yields of products with moderate diastereoselectivities. Good yields of *trans*-3-fluoro-2,3-disubstituted chroman-4-ones with outstanding diastereoselectivity are produced by the direct fluorination of 2,3-disubstituted chroman-4-one products (Scheme 23).

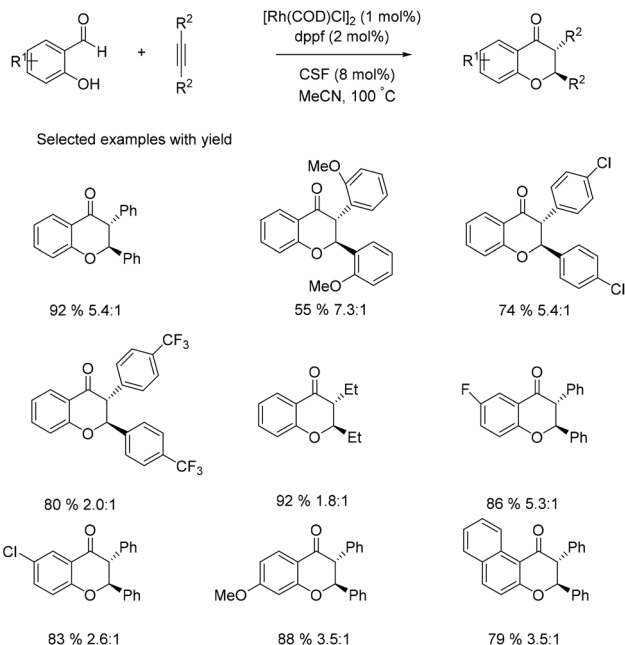
Later in 2016, Jhuang and team introduced the synthesis of ketones and chroman-4-one derivatives from the DTBP/TBHP-promoted hydroacylation of unactivated alkenes under metal



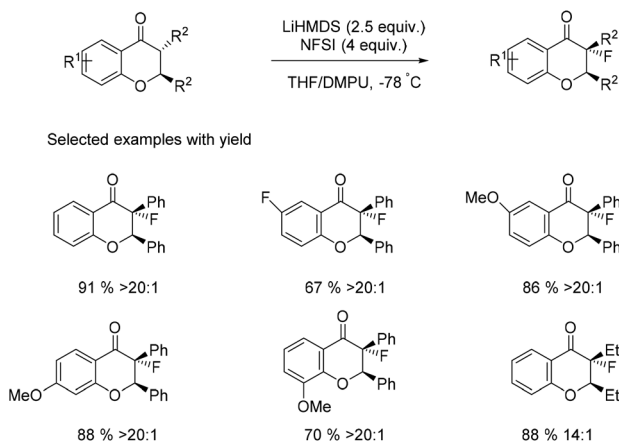
Selected examples with yield



Scheme 21 Synthesis of functionalised chroman-4-ones from 2-(allyloxy)arylaldehydes with sodium sulfinite *via* cascade radical cyclization.



Scheme 22 Reaction of 1,2-disubstituted alkyne with salicylaldehydes via rhodium catalyzed hydroacylation followed by oxo-Michael addition.

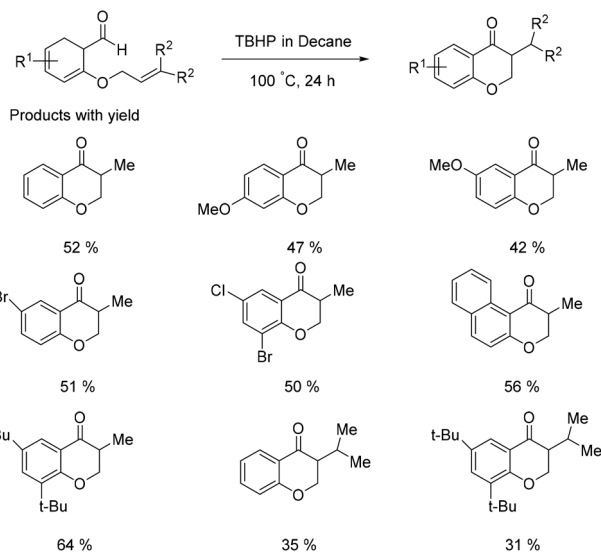


Scheme 23 Preparation of diastereoselective 3-fluoro-2,3-disubstituted chroman-4-ones.

and solvent-free conditions (Scheme 24).⁶⁵ Ketones are prepared from alkenes with aromatic aldehydes by di-*tert*-butyl peroxide (DTBP)-promoted intermolecular hydroacylation reaction. The *tert*-butyl hydroperoxide (TBHP)-promoted intramolecular hydroacylation reaction of 2-(allyloxy)benzaldehydes gave chroman-4-one derivatives at 100 °C in 24 hours. Various 2-(allyloxy)benzaldehydes with electron-donating or electron-withdrawing substituents were tolerated well in this reaction and gave moderate yields of the corresponding 4-chromanones.

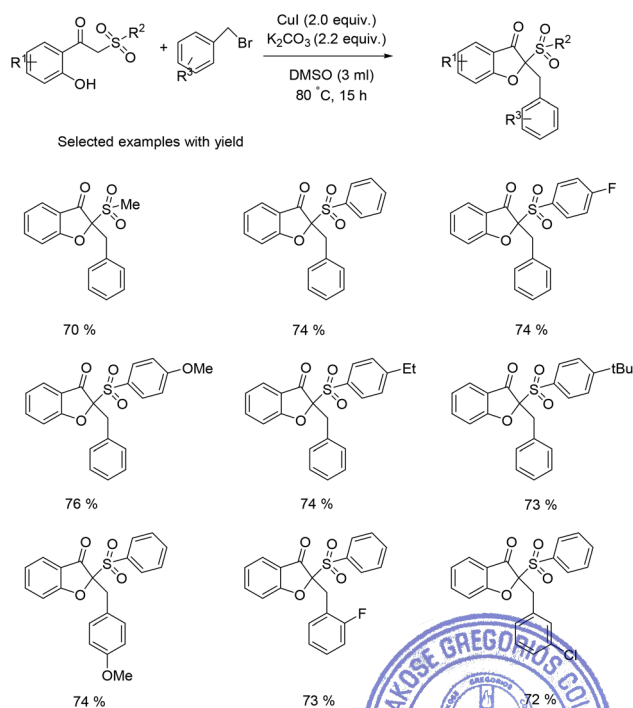
2.3 Synthesis of chroman-4-one derivatives via double Michael addition cascade reaction

In 2018, Chang Wu and Chen reported a new method for the preparation of sulfonyl benzofuran-3-ones and sulfonyl



Scheme 24 TBHP-promoted intramolecular hydroacylation of 2-(allyloxy)benzaldehydes.

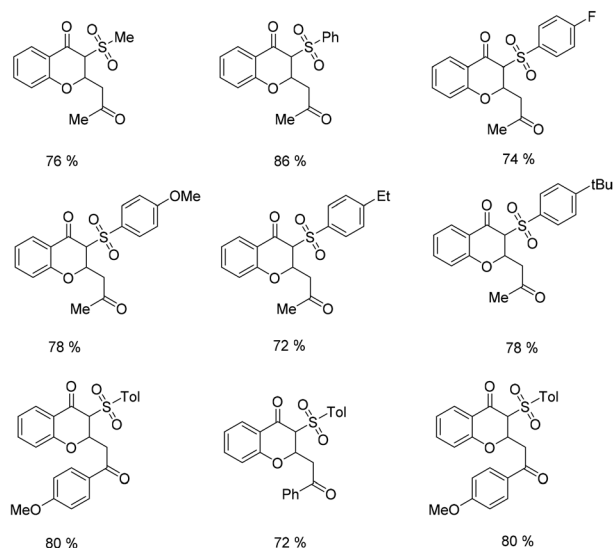
chroman-4-ones via a $\text{K}_2\text{CO}_3/\text{CuI}/\text{DMSO}$ -mediated reaction from α -sulfonyl *o*-hydroxyacetophenones.⁶⁶ Sulfonyl benzofuran-3-one was developed via double benzylation followed by debenzylative annulation of α -sulfonyl *o*-hydroxyacetophenones with benzyl bromides (Scheme 25). Sulfonyl chroman-4-ones were prepared from α -sulfonyl *o*-hydroxyacetophenones and ynones by a double Michael addition cascade reaction and offered wide-ranging chroman-4-ones in good yields (65%–86%)



Scheme 25 Synthesis of sulfonyl benzofuran-3-one by double benzylation followed by debenzylative annulation.



Selected examples with yield



Scheme 26 Synthesis of sulfonyl chroman-4-ones by a double Michael addition cascade reaction.

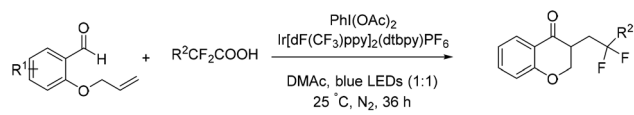
(Scheme 26). Diastereomeric ratios were studied using the NMR spectra obtained in the range of 3 : 2–8 : 1.

2.4. Synthesis of chroman-4-one derivatives via acyldifluoroalkylation using an intramolecular oxidative radical addition strategy

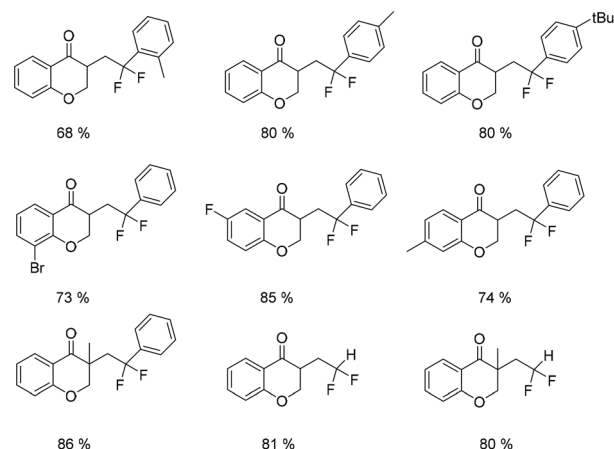
In 2019, Zhou and team introduced an innovative way to synthesise a variety of *gem*-difluorinated cyclic ketones by visible-light irradiated acyldifluoroalkylation of unactivated alkenes with difluoroacetic acids by an intramolecular oxidative radical addition approach using $\text{Ir}[\text{dF}(\text{CF}_3)\text{ppy}]_2(\text{dtbpy})\text{PF}_6$ as a photocatalyst and $\text{PhI}(\text{OAc})_2$ as an oxidant in DMAc solvent (Scheme 27).⁶⁷ The stable, low-cost, and easily available difluoroacetic acid acts as the difluoroalkylation reagent, which is very stable, easily available and cheap. Various *gem*-difluorinated cyclic ketones like chroman-4-ones, 2,3-dihydroquinolin-4(1*H*)-ones, 3,4-dihydronaphthalen-1(2*H*)-ones, indanones, and cyclopent-2-enones were synthesised using this method. Different alkenyl aldehydes and 2-(allyloxy)benzaldehydes effectively participated in the reaction and gave the desired results. α,α -Difluoroarylacetic acids with electron-donating or electron-withdrawing substituents on the phenyl ring offered the required products with moderate to good yields.

2.5 Miscellaneous

In 2020, Xie *et al.* successfully introduced the synthesis of 3-functionalized chromanones possessing an all-carbon quaternary centre by phosphine catalyzed reaction under mild

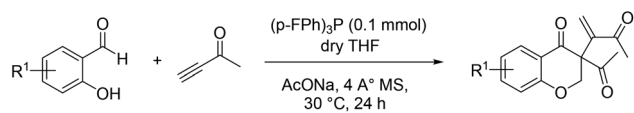


Selected examples with yield

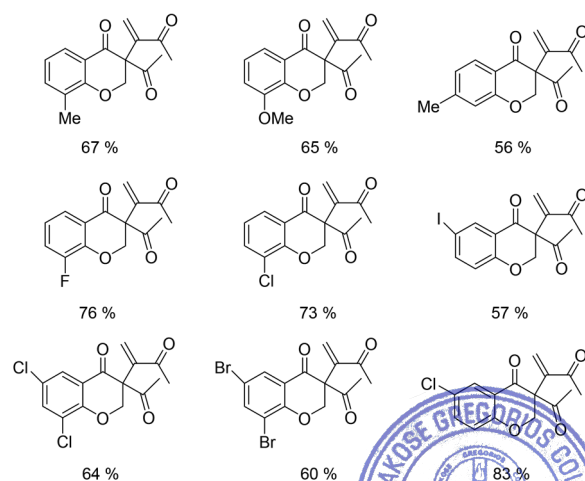


Scheme 27 Synthesis of 4-chromanone derivatives via visible light photocatalytic acyldifluoroalkylation.

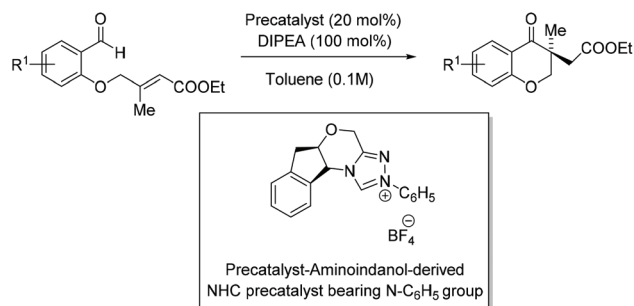
conditions (Scheme 28).⁶⁸ This involved a three-component domino sequence of salicylaldehydes reacting with but-3-yn-2-one using tris(4-fluorophenyl)phosphane, (*p*-FPh)₃P, at 30 °C, with sodium acetate AcONa, and 4 Å molecular sieves as an additive in dry THF as solvent for 24 hours. Salicylaldehyde with electron-withdrawing substituents gave a greater yield of the product with but-3-yn-2-one compared to that with electron donating groups. Further substituted ynones are not appropri-



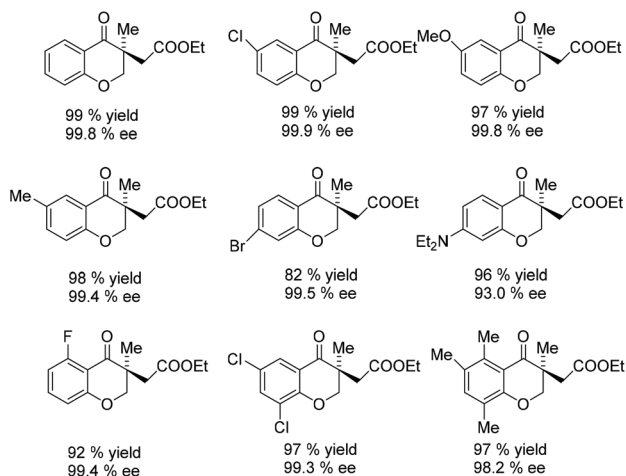
Selected examples with yield



Scheme 28 Synthesis of 3-functionalized chromanone derivatives via a phosphine catalyzed reaction.



Selected examples with yield



Scheme 29 Synthesis of chromanone derivatives with a quaternary stereocentre by intramolecular NHC-catalyzed annulation.

ate for effective reaction. The structure of the product was studied by X-ray crystallography.

In 2020, Dzieszkowski and Rafiński developed an efficient enantioselective method for the synthesis of chromanone derivatives with a quaternary stereocentre by intramolecular NHC-catalyzed annulation (Scheme 29).⁶⁹ This novel method involved the reaction between β,β -disubstituted Michael acceptors such as salicylaldehyde-derived β -methylacrylate and optically pure *N*-substituted triazolium salts such as aminoindanol-derived NHC precatalysts bearing an N-C₆H₅ group in the presence of diisopropylethylamine (DIPEA) as a base and toluene as solvent. Irrespective of the position of substituents, salicylaldehyde-derived β -methylacrylate with electron-donating or electron-withdrawing groups gave high yields of products possessing outstanding stereo-control. Also, di- and tri-substituted substrates showed excellent product yields with high level of enantioselectivity.

3. Conclusion

Chroman-4-ones containing a benzene nucleus attached to the 2,3-dihydro- γ -pyranone ring are of great significance as skeleton units in therapeutic agents and biologically active syn-

thetic derivatives and are used as structural motifs in organic synthesis. The advancement of pharmacologically active compounds based on chromone scaffolds has been a promising area of forthcoming research. In this review, we offered a comprehensive report of the synthesis methods of chroman-4-one derivatives developed over the last 5 years and discussed the synthesis of chroman scaffolds *via* cascade radical cyclization, hydroacylation, hydroacylation/oxo-Michael addition, acyldifluoroalkylation with intramolecular oxidative radical addition and double Michael addition. Different types of structural modifications of the chroman-4-one family occur by means of its 2,3-dihydro- γ -pyranone ring, mainly at I, II and IV positions. We conclude by expecting that this will inspire scholars to further investigate and develop this exciting area of research. We expect that the years ahead will be a remarkable era for the advancement of the applicability of chromone-based compounds in medicinal chemistry for the therapy of numerous illnesses.

Conflicts of interest

There are no conflicts to declare.

Acknowledgements

USK and EJD thank the Mahatma Gandhi University and the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR-New Delhi) for the award of junior research fellowships, respectively. GA thanks the Kerala State Council for Science, Technology & Environment (KSCSTE), Trivandrum for a research grant (No. 341/2013/KSCSTE dated 15.03.2013) and EVONIK Industries, Germany for financial support (ECRP 2016 dated 6.10.2016).

References

- 1 J. Reis, A. Gaspar, N. Milhazes and F. Borges, Chromone as a Privileged Scaffold in Drug Discovery: Recent Advances, *J. Med. Chem.*, 2017, **60**(19), 7941–7957, DOI: 10.1021/acs.jmedchem.6b01720.
- 2 U. S. Kanchana, E. J. Diana, T. V. Mathew and G. Anilkumar, Palladium-catalyzed cross-coupling reactions of coumarin derivatives: An overview, *Appl. Organomet. Chem.*, 2020, (August), 1–17, DOI: 10.1002/aoc.5983.
- 3 E. J. Diana, U. S. Kanchana, T. V. Mathew and G. Anilkumar, Recent developments in the metal catalysed cross-coupling reactions for the synthesis of the enone system of chalcones, *Appl. Organomet. Chem.*, 2020, (August), 1–17, DOI: 10.1002/aoc.5987.
- 4 R. K. Saini, Y. S. Keum, M. Daglia and K. R. Rengasamy, Dietary carotenoids in cancer chemoprevention and chemotherapy: A review of emerging evidence, *Pharmacol. Res.*, 2020, **157**(January), 104830, DOI: 10.1016/j.phrs.2020.104830.

- 5 S. J. Maleki, J. F. Crespo and B. Cabanillas, Anti-inflammatory effects of flavonoids, *Food Chem.*, 2019, **299**(July), 125124, DOI: 10.1016/j.foodchem.2019.125124.
- 6 A. E. Nibbs and K. A. Scheidt, Asymmetric methods for the synthesis of flavanones, chromanones, and azaflavanones, *Eur. J. Org. Chem.*, 2012, (3), 449–462, DOI: 10.1002/ejoc.201101228.
- 7 U. Albrecht, M. Lalk and P. Langer, Synthesis and structure-activity relationships of 2-vinylchroman-4-ones as potent antibiotic agents, *Bioorg. Med. Chem.*, 2005, **13**(5), 1531–1536, DOI: 10.1016/j.bmc.2004.12.031.
- 8 F. Di Pisa, G. Landi, L. Dello Iacono, *et al.*, Chroman-4-one derivatives targeting pteridine reductase 1 and showing anti-parasitic activity, *Molecules*, 2017, **22**(3), 1–16, DOI: 10.3390/molecules22030426.
- 9 T. Seifert, M. Malo, T. Kokkola, *et al.*, Chroman-4-one- and chromone-based sirtuin 2 inhibitors with antiproliferative properties in cancer cells, *J. Med. Chem.*, 2014, **57**(23), 9870–9888, DOI: 10.1021/jm500930h.
- 10 D. Kumar, P. Sharma, H. Singh, *et al.*, The value of pyrans as anticancer scaffolds in medicinal chemistry, *RSC Adv.*, 2017, **7**(59), 36977–36999, DOI: 10.1039/c7ra05441f.
- 11 T. C. McKee, H. R. Bokeschr, J. L. McCormick, *et al.*, Isolation and characterization of new anti-HIV and cytotoxic leads from plants, marine, and microbial organisms, *J. Nat. Prod.*, 1997, **60**(5), 431–438, DOI: 10.1021/np970031g.
- 12 M. Fridén-Saxin, T. Seifert, M. R. Landergren, *et al.*, Synthesis and evaluation of substituted chroman-4-one and chromone derivatives as sirtuin 2-selective inhibitors, *J. Med. Chem.*, 2012, **55**(16), 7104–7113, DOI: 10.1021/jm3005288.
- 13 M. K. Khan, Zill-E-Huma and O. Dangles, A comprehensive review on flavanones, the major citrus polyphenols, *J. Food Compos. Anal.*, 2014, **33**(1), 85–104, DOI: 10.1016/j.jfca.2013.11.004.
- 14 L. Křížová, K. Dadáková, J. Kašparovská and T. Kašparovský, Isoflavones, *Molecules*, 2019, **24**(6), 1076, DOI: 10.3390/molecules24061076.
- 15 N. G. Ghatpande, J. S. Jadhav, R. V. Kaproormath, M. E. Soliman and M. M. Shaikh, A brief overview on recent advances in spiro[chromane-2,4'-piperidine]-4(3H)-one-functionalized compounds in medicinal chemistry research, *Bioorg. Med. Chem.*, 2020, **28**(23), 115813, DOI: 10.1016/j.bmc.2020.115813.
- 16 N. S. Shaikh, Y. M. Kushalappa, S. P. Sheshappa and H. H. Nagaraju, Iron-Catalyzed Crossed-Aldol Condensation for the Synthesis of 3-Benzylidene-4-chromanones: An Efficient Synthesis of Homoisoflavanoids †, *ChemistrySelect*, 2019, **4**(44), 13029–13033, DOI: 10.1002/slct.201903862.
- 17 L. Testai and V. Calderone, Nutraceutical value of citrus flavanones and their implications in cardiovascular disease, *Nutrients*, 2017, **9**(5), 1–13, DOI: 10.3390/nu9050502.
- 18 M. Stompor, A review on sources and pharmacological aspects of sakuranetin, *Nutrients*, 2020, **12**(2), 513, DOI: 10.3390/nu12020513.
- 19 M. R. Heidary, Z. Samimi, S. Z. Moradi, P. J. Little, S. Xu and M. H. Farzaei, Naringenin and naringin in cardiovascular disease prevention: A preclinical review, *Eur. J. Pharmacol.*, 2020, **887**(June), 173535, DOI: 10.1016/j.ejphar.2020.173535.
- 20 A. Islam, M. S. Islam, M. K. Rahman, M. N. Uddin and M. R. Akanda, The pharmacological and biological roles of eriodictyol, *Arch. Pharmacol. Res.*, 2020, **43**(6), 582–592, DOI: 10.1007/s12272-020-01243-0.
- 21 A. Khan, M. Ikram, J. R. Hahm and M. O. Kim, Antioxidant and anti-inflammatory effects of citrus flavonoid hesperetin: Special focus on neurological disorders, *Antioxidants*, 2020, **9**(7), 1–15, DOI: 10.3390/antiox9070609.
- 22 J. Hofmann, S. Fayeze, M. Scheiner, *et al.*, Sterubin: Enantioresolution and Configurational Stability, Enantiomeric Purity in Nature, and Neuroprotective Activity in Vitro and in Vivo, *Chem. – Eur. J.*, 2020, **26**(32), 7299–7308, DOI: 10.1002/chem.202001264.
- 23 K. Zaheer and M. H. Akhtar, An updated review of dietary isoflavones: Nutrition, processing, bioavailability and impacts on human health, *Crit. Rev. Food Sci. Nutr.*, 2017, **57**(6), 1280–1293, DOI: 10.1080/10408398.2014.989958.
- 24 H. S. Tuli, M. J. Tuorkey, F. Thakral, *et al.*, Molecular mechanisms of action of genistein in cancer: Recent advances, *Front. Pharmacol.*, 2019, **10**(December), 1–16, DOI: 10.3389/fphar.2019.01336.
- 25 D. Das, S. Sarkar, J. Bordoloi, S. B. Wann, J. Kalita and P. Manna, Daidzein, its effects on impaired glucose and lipid metabolism and vascular inflammation associated with type 2 diabetes, *BioFactors*, 2018, **44**(5), 407–417, DOI: 10.1002/biof.1439.
- 26 Y. Q. Zang, Y. Y. Feng, Y. H. Luo, *et al.*, Glycitein induces reactive oxygen species-dependent apoptosis and G0/G1 cell cycle arrest through the MAPK/STAT3/NF-κB pathway in human gastric cancer cells, *Drug Dev. Res.*, 2019, **80**(5), 573–584, DOI: 10.1002/ddr.21534.
- 27 A. Sarfraz, M. Javed, M. A. Shah, *et al.*, Biochanin A: A novel bioactive multifunctional compound from nature, *Sci. Total Environ.*, 2020, **722**, 137907, DOI: 10.1016/j.scitotenv.2020.137907.
- 28 K.-C. Tay, L. T.-H. Tan, C. K. Chan, *et al.*, Formononetin: A Review of Its Anticancer Potentials and Mechanisms, *Front. Pharmacol.*, 2019, **10**(July), 1–19, DOI: 10.3389/fphar.2019.00820.
- 29 S. Emami and Z. Ghanbarimasir, Recent advances of chroman-4-one derivatives: Synthetic approaches and bioactivities, *Eur. J. Med. Chem.*, 2015, **93**, 539–563, DOI: 10.1016/j.ejmech.2015.02.048.
- 30 C. M. M. Santos and A. M. S. Silva, An Overview of 2-Styrylchromones: Natural Occurrence, Synthesis, Reactivity and Biological Properties, *Eur. J. Org. Chem.*, 2017, **2017**(22), 3115–3133, DOI: 10.1002/ejoc.201700003.

- 31 U. S. Kanchana, E. J. Diana, T. V. Mathew and G. Anilkumar, Cyclodextrin based palladium catalysts for Suzuki reaction: An overview, *Carbohydr. Res.*, 2020, **489**(November 2019), 107954, DOI: 10.1016/j.carres.2020.107954.
- 32 U. S. Kanchana, E. J. Diana, T. V. Mathew and G. Anilkumar, Palladium-Catalyzed C–P Bond Forming Reactions: An Overview, *ChemistrySelect*, 2021, **6**(7), 1579–1588, DOI: 10.1002/slct.202004433.
- 33 D. E. Jose, U. S. Kanchana, T. V. Mathew and G. Anilkumar, Recent Developments and Perspectives in the C–Se Cross Coupling Reactions, *Curr. Org. Chem.*, 2020, **24**(11), 1230–1262, DOI: 10.2174/1385272824999200528130131.
- 34 D. E. Jose, U. S. Kanchana, T. V. Mathew and G. Anilkumar, Recent studies in Suzuki-Miyaura cross-coupling reactions with the aid of phase transfer catalysts, *J. Organomet. Chem.*, 2020, **927**, 121538, DOI: 10.1016/j.jorganchem.2020.121538.
- 35 Z. Ullah and R. Thomas, Mechanistic insights can resolve the low reactivity and selectivity issues in intermolecular Rauhut–Currier (RC) reaction of γ -hydroxyenone, *New J. Chem.*, 2020, **44**(29), 12857–12865, DOI: 10.1039/D0NJ02732D.
- 36 Z. Ullah and R. Thomas, Markovnikov versus anti-Markovnikov addition and C–H activation: Pd–Cu synergistic catalysis, *Appl. Organomet. Chem.*, 2021, **35**(1), e6077, DOI: 10.1002/aoc.6077.
- 37 L. H. Jones, Dehydroamino acid chemical biology: an example of functional group interconversion on proteins, *RSC Chem. Biol.*, 2020, **1**(5), 298–304, DOI: 10.1039/d0cb00174k.
- 38 F. Emmetiere and A. J. Grenning, Functional Group Interconversion of Alkylidenemalononitriles to Primary Alcohols by a Cooperative Redox Operation, *Synthesis*, 2020, **52**(2), 3077–3085, DOI: 10.1055/s-0040-1707184.
- 39 L. Y. Xie, T. G. Fang, J. X. Tan, *et al.*, Visible-light-induced deoxygenative C2-sulfonylation of quinoline N-oxides with sulfinic acids, *Green Chem.*, 2019, **21**(14), 3858–3863, DOI: 10.1039/c9gc01175g.
- 40 L. Y. Xie, S. Peng, F. Liu, *et al.*, Metal-free deoxygenative sulfonylation of quinoline N-oxides with sodium sulfinates via a dual radical coupling process, *Org. Chem. Front.*, 2018, **5**(17), 2609–2614, DOI: 10.1039/c8qo00661j.
- 41 Q. Liu, C. Chen and X. Tong, Pd(0)-catalyzed atom transfer radical cyclization of N-allyl- α -chloroamides: highly stereoselective synthesis of substituted γ -lactam, *Tetrahedron Lett.*, 2015, **56**(30), 4483–4485, DOI: 10.1016/j.tetlet.2015.05.094.
- 42 L. Xiong, H. Hu, C. W. Wei and B. Yu, Radical Reactions for the Synthesis of 3-Substituted Chroman-4-ones, *Eur. J. Org. Chem.*, 2020, **2020**(11), 1588–1597, DOI: 10.1002/ejoc.201901581.
- 43 J. Zhao, P. Li, X. Li, C. Xia and F. Li, Straightforward synthesis of functionalized chroman-4-ones through cascade radical cyclization-coupling of 2-(allyloxy)arylaldehydes, *Chem. Commun.*, 2016, **52**(18), 3661–3664, DOI: 10.1039/c5cc09730d.
- 44 W. C. Yang, P. Dai, K. Luo, Y. G. Ji and L. Wu, Aldehydes as Carbon Radical Acceptors: Silver Nitrate Catalyzed Cascade Decarboxylation and Oxidative Cyclization toward Dihydroflavonoid Derivatives, *Adv. Synth. Catal.*, 2017, **359**(14), 2390–2395, DOI: 10.1002/adsc.201601407.
- 45 D. Lu, Y. Wan, L. Kong and G. Zhu, Visible-Light-Induced Tandem Radical Addition-Cyclization of Alkenyl Aldehydes Leading to Indanones and Related Compounds, *Org. Lett.*, 2017, **19**(11), 2929–2932, DOI: 10.1021/acs.orglett.7b01162.
- 46 S. Jung, J. Kim and S. Hong, Visible Light-Promoted Synthesis of Spiroepoxy Chromanone Derivatives via a Tandem Oxidation/Radical Cyclization/Epoxidation Process, *Adv. Synth. Catal.*, 2017, **359**(22), 3945–3949, DOI: 10.1002/adsc.201701072.
- 47 H. Hu, X. Chen, K. Sun, *et al.*, Silver-catalyzed decarboxylative cascade radical cyclization of: Tert-carboxylic acids and o-(allyloxy)arylaldehydes towards chroman-4-one derivatives, *Org. Chem. Front.*, 2018, **5**(20), 2925–2929, DOI: 10.1039/c8qo00882e.
- 48 H. Hu, X. Chen, K. Sun, *et al.*, Silver-Catalyzed Radical Cascade Cyclization toward 1,5-/1,3-Dicarbonyl Heterocycles: An Atom-/Step-Economical Strategy Leading to Chromenopyridines and Isoxazole-/Pyrazole-Containing Chroman-4-Ones, *Org. Lett.*, 2018, **20**(19), 6157–6160, DOI: 10.1021/acs.orglett.8b02627.
- 49 J. Sheng, J. Liu, L. Chen, L. Zhang, L. Zheng and X. Wei, Silver-catalyzed cascade radical cyclization of 2-(allyloxy)arylaldehydes with cyclopropanols: Access to chroman-4-one derivatives, *Org. Chem. Front.*, 2019, **6**(9), 1471–1475, DOI: 10.1039/c9qo00292h.
- 50 Q. Liu, G. Xie, Q. Wang, *et al.*, Synthesis of chroman-4-one and indanone derivatives via silver catalyzed radical ring opening/coupling/cyclization cascade, *Tetrahedron*, 2019, **75**(41), 130490, DOI: 10.1016/j.tet.2019.130490.
- 51 N. Zhou, M. Wu, M. Zhang and X. Zhou, Visible-Light-Induced Difluoroacetylation of O-(Allyloxy)Aryl-Aldehydes: Access to Difluoroacetylated Chroman-4-ones, *Asian J. Org. Chem.*, 2019, **8**(6), 828–831, DOI: 10.1002/ajoc.201900121.
- 52 Y. M. Xiao, Y. Liu, W. P. Mai, P. Mao, J. W. Yuan and L. R. Yang, A Novel and Facile Synthesis of Chroman-4-one Derivatives via Cascade Radical Cyclization Under Metal-free Condition, *ChemistrySelect*, 2019, **4**(6), 1939–1942, DOI: 10.1002/slct.201900147.
- 53 X. K. He, B. G. Cai, Q. Q. Yang, L. Wang and J. Xuan, Visible-Light-Promoted Cascade Radical Cyclization: Synthesis of 1,4-Diketones Containing Chroman-4-One Skeletons, *Chem. – Asian J.*, 2019, **14**(19), 3269–3273, DOI: 10.1002/asia.201901078.
- 54 G. H. Li, Q. Q. Han, Y. Y. Sun, *et al.*, Visible-light induced cascade radical cyclization of sulfinic acids and o-(allyloxy)arylaldehydes towards functionalized chroman-4-ones, *Chin. Chem. Lett.*, 2020, **31**(12), 3255–3258, DOI: 10.1016/j.cclet.2020.03.007.

- 55 Q. Liu, W. Lu, G. Xie and X. Wang, Metal-free synthesis of phosphinoylchroman-4-ones via a radical phosphinoylation – cyclization cascade mediated by $K_2S_2O_8$, *Beilstein J. Org. Chem.*, 2020, (16), 1974–1982, DOI: 10.3762/bjoc.16.164.
- 56 H. Huang, J. Du, Q. Li and F. Gao, Visible-Light-Promoted Cascade Radical Cyclization: Synthesis of Chroman-4-ones and Dihydroquinolin-4-ones, *J. Org. Chem.*, 2020, (85), 1–10, DOI: 10.1021/acs.joc.9b03253.
- 57 Y. Mei, L. Zhao, Q. Liu, S. Ruan, L. Wang and P. Li, Synthesis of sulfone-functionalized chroman-4-ones and chromans through the visible-light-induced cascade radical cyclization under transition-metal-free conditions Yousheng, *Green Chem.*, 2020, 22, 2270–2278, DOI: 10.1039/D0GC00009D.
- 58 S. Das, S. K. Parida, T. Mandal, L. Sing, S. De Sarkar and S. Murarka, Organophotoredox-Catalyzed Cascade Radical Annulation of 2-(Allyloxy)arylaldehydes with N-(acyloxy)phthalimides: Towards Alkylated Chroman-4-one Derivatives, *Chem. – Asian J.*, 2020, 15(5), 568–572, DOI: 10.1002/asia.201901735.
- 59 Q. Q. Han, G. H. Li, Y. Y. Sun, *et al.*, Silver-catalyzed cascade radical cyclization of sodium sulfinates and o-(allyloxy)arylaldehydes towards functionalized chroman-4-ones, *Tetrahedron Lett.*, 2020, 61(14), 151704, DOI: 10.1016/j.tetlet.2020.151704.
- 60 D. Crépin, J. Dawick and L. Aïssa, Combined rhodium-catalyzed carbon-hydrogen activation and β -carbon elimination to access eight-membered rings, *Angew. Chem., Int. Ed.*, 2010, 49(3), 620–623, DOI: 10.1002/anie.200904527.
- 61 F. Shibahara and M. J. Krische, Formation of C-C bonds via ruthenium-catalyzed transfer hydrogenation: Carbonyl addition from the alcohol or aldehyde oxidation level, *Chem. Lett.*, 2008, 37(11), 1102–1107, DOI: 10.1246/cl.2008.1102.
- 62 N.-X. Wang, Y. Xing and Y.-J. Wang, ChemInform Abstract: Asymmetric Synthesis of Chiral Flavanone and Chromanone Derivatives, *Curr. Org. Chem.*, 2013, 17, 1555–1562, DOI: 10.1002/chin.201351249.
- 63 H.-J. Kabbe and A. Widdig, Synthesis and Reactions of 4-Chromanones, *Angew. Chem., Int. Ed. Engl.*, 1982, 21(4), 247–256, DOI: 10.1002/anie.198202471.
- 64 X. Du and L. M. Stanley, Tandem Alkyne Hydroacylation and Oxo-Michael Addition: Diastereoselective Synthesis of 2,3-Disubstituted Chroman-4-ones and Fluorinated Derivatives, *Org. Lett.*, 2015, 17(13), 3276–3279, DOI: 10.1021/acs.orglett.5b01447.
- 65 H. S. Jhuang, D. M. Reddy, T. H. Chen and C. F. Lee, DTBP/TBHP-Promoted Hydroacylation of Unactivated Alkenes, *Asian J. Org. Chem.*, 2016, 5(12), 1452–1456, DOI: 10.1002/ajoc.201600423.
- 66 M. Chang, Y. Wu and H. Chen, CuI-Mediated Synthesis of Sulfonyl Benzofuran-3-ones and Chroman-4-ones, *Org. Lett.*, 2018, (20), 1824–1827, DOI: 10.1021/acs.orglett.8b00316.
- 67 Y. Zhou, Z. Xiong, J. Qiu, L. Kong and G. Zhu, Visible light photocatalytic acyldifluoroalkylation of unactivated alkenes for the direct synthesis of: Gem-difluorinated ketones, *Org. Chem. Front.*, 2019, 6(7), 1022–1026, DOI: 10.1039/c9qo00136k.
- 68 Z.-Z. Xie, Z.-X. Deng, Y. Zheng, Y.-S. Chen, J.-A. Xiao, K. Chen and H.-Y. Xiang, Phosphine-mediated Domino Sequence of Salicylaldehyde with But-3-yn-2-one: Rapid Access to Chromanone, *Org. Biomol. Chem.*, 2020, (18), 8916, DOI: 10.1039/D0OB01588A.
- 69 K. Dzieszowski and Z. Rafiński, N-Heterocyclic, Carbene-Catalyzed Enantioselective Intramolecular Annulations to Construct Benzo-Fused Pyranones with Quaternary Stereocenter, *Adv. Synth. Catal.*, 2020, (362), 3830–3835, DOI: 10.1002/adsc.202000550.



International Journal of Physical Education, Sports and Health

P-ISSN: 2394-1685
E-ISSN: 2394-1693
Impact Factor (ISRA): 5.38
IJPESH 2021; 8(4): 158-160
© 2021 IJPESH
www.kheljournal.com
Received: 12-05-2021
Accepted: 15-06-2021

Dr. Joji M Philip
Associate Professor,
Department of Physical
Education, K G College
Pampady, Kerala, India

Praveen Thariyan
Assistant Professor,
Department of Physical
Education St. Dominic's College
Kanjirapally, Kerala, India

Careers in sports management

Dr. Joji M Philip and Praveen Thariyan

DOI: <https://doi.org/10.22271/kheljournal.2021.v8.i4c.2158>

Abstract

Sports management is a branch of knowledge that is directly involved in sports and recreation. It becomes a discipline of academic interest and deals with areas such as administration, finance, law, and ethics. There are different aspects of sports management. Those interested in the financial and financial aspects of the sports world may consider focusing their studies on finance and related subjects. Similarly, sports managers who want to work in international sports organizations should take courses such as international marketing. Advertising of various sports leagues in various sports in India started a world of possibilities and increased the scope of activities. A special achievement of a degree in sports management is a range of career paths to choose from. From traditional career options such as athletic coaches, athletic administrators, player or coach agents to sports organizations, team managers, coaches, or even a sports event planner to retail sales and branding, the scope of the situation varies. Developing countries like India can take advantage of the immense potential of the sports world by promoting sports management.

Keywords: Sports management, marketing

Introduction


Management is the act of making efficient use of available resources to express the desired goals and objectives. Nowadays in sports too, management plays an important role in the field including start-up, training and competition. Sports management deals with skills, ideas related to management, finance, marketing and sports-related laws. Individuals wishing to pursue a career in sports management should acquire an academic qualification that ensures a comprehensive understanding of sports, business management, and meaningful practical work experience related to handling sports organizations/events.

Sports management is a cocktail of physical education, human participation, business governance, management and communication. As the sports industry is very large and diverse, certain degree programs may be pursued for specific segments of the sports industry, such as golf management, sports communications/media, and sports tourism/travel/hospitality.

Like any other business, sports organizations require employees with financial, operational and marketing skills. However, a sports manager must have a thorough knowledge of the issues specific to the industry. To give an example, sports economists need to understand concepts such as athletic evaluation in order to negotiate with players and vendors' contracts. When it comes to marketing, the challenge is not to sell a product, but to bring in participants. Marketing professionals may also be responsible for coordinating the external communications of a franchise, such as using social media to facilitate close contact between local fans and their home team. These are issues that require a particular skill that goes beyond the typical corporate environment. Because it produces individuals with strong athletic backgrounds and leadership experience, it is highly valued to talk about varsity sport, participate in school sports organizations/clubs, and assist with school sports events or clinics. As the sports industry is very large and diverse, there are many job opportunities in a variety of organizational settings.

Sports Management

Sports management is the combination of skills related to planning, organization, management, control, budgeting, guidance, and evaluation in the context of an organization or department with a primary product or service related to sports or physical activity.


Prof. (Dr.) Renny P. Varghese
Principal
Kuriakose Gregorios College
Pampady, Kottayam - 686 502

Corresponding Author:
Dr. Joji M Philip
Associate Professor,
Department of Physical
Education, K G College
Pampady, Kerala, India